अथ बनिताबुद्धिप्रकाशिनी

Banitabuddhi prakasini

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी
श्रीयुत नव्वाब लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की
आज्ञानुसार

श्रीयुत विद्यातिविद्य श्री साहिब डैरेकृर आफ़ पबलिक

इनस्ट्रक्शन बहादुर के सरिश्ते में

हमीरपुर ज़िलअ स्कूल के अव्वल मुदरिंस

रामलाल ने बनाई

16

इलाहाबाद

गवर्नमेंट के छापेख़ाने में छापी गई

सन् १८७५ ई०

९११

Edition, 5,000 copies,
e per copy, $3\frac{1}{2}$ annas.

दूसरी बार ५००० पुस्तकें
मोल फ़ी पुस्तक ≥)६ पाई

1875
48

13

श्रीसच्चिदानंदमूर्त्तयेपरमात्मनेनमः

बनिताबुद्धिप्रकाशिनी

मंगलाचरण

दोहा

प्रेमसहित बन्दों प्रथम हरिपदकमल अनूप।
जिनके सुमिरत रंक हू होत प्रतापी भूप॥
चरण शरण आयो प्रभू राखि लेउ निज टेक।
दीनबंधु करके दया देवहु विमल बिवेक॥
बुधि बल नहिं मुंहको कछू केवल तुम बिसवास।
देव दया करि दीन पै पुजवहु मन की आस॥
सुन्दर कथा प्रबंध करि कहिहों मति अनुरूप।
बनिताबुद्धि प्रकाशिनी पुस्तक परम अनूप॥
दुर्घट गति अभिलाष अति देखि बुद्धि बल थोर।
मुनि बिनती करिके दया सुजस सुधरि हैं खोर॥

प्रथम उस सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ जगदीश्वर का धन्यवाद करना चाहिये जिसने इस संसार रूपी चित्र विचित्र फुलवाड़ी को लगाया है और नाना रंग के वृक्षादि लगाके प्रत्येक फल फूल में अपनी ईश्वरता को दिखाया है उसकी अनन्त महिमा का किसी ने भी पार नहीं पाया है और उसी त्रिलोकी नाथ ने प्राणीमात्र से मनुष्य को उत्तम बनाया और बाणी बुद्धि देकर

मनुष्य को उचि
सब जीवों में श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित ठहराया है इसलि दी हुई अमोल
है कि उत्तम चोला पाकर उस दीनबंधु दयासिंधु की वे कि बाणी से
दोनों मणियों को बड़ी सावधानी से इस प्रकार काम में लेवचन भाग्य
तो नित्य उस प्राणदाता के बिमल गुणगण गावे और सत्य न यश
के सदा उसको रिझावे और परोपकार हेतु उच्चार कर प्रतिदिन
कीर्त्ति बढ़ावे कोमल और मधुर बचन बोल प्राणियों के हृदय की आ
रूपी कली को खिलावे और दूसरी मणि बुद्धि की कसौटी बनाके प्रत्येक
व्यवहार रूपी पदार्थ को कसके मन चित लगा गुण दोष भली भांति
बिचारे यह बात प्रत्यक्ष है कि आदि की और आज की रीतों में धरती
आकाश का अंतर पड़गया है भिन्न २ समयों में बुद्धिमानों ने अपनी २
मति के अनुसार नई २ रीतें चलाई हैं खोज करने से प्रत्येक रीति का
मूल जान सक्ते हैं कि अमुक रीति अमुक कारण पाके प्रचलित हुई है
सहसा यह कह बैठना उचित नहीं कि जो रीति हमारे कुल में चली
आती है न वह चाहे भली हो चाहे बुरी हो उसको हम छोड़ नहीं सक्ते
क्योंकि हम जो रीतें अपने घराने में प्रचलित देखते हैं वे बहुधा बीच
की बनी हुई स्पष्ट जान पड़ती हैं बहुतसी रीतें तो समय की बिपरी-
तता से लाचार हो चलाई हुई हैं और बहुतेरी मूर्ख स्त्रियों ने चला
दी हैं इसलिये प्रथम यह बिचारना चाहिये कि जो रीतें हमारे कुल में
प्रचलित हैं उन में कौन प्राचीन और कौन नबीन हैं और कौन शास्त्रीक
हैं और कौन डुकरिया पुराणीक हैं कौन बुद्धिमानों ने कुछ हानि ला
बिचार के प्रचलित कीं और कौन ठलुओं ने मूर्खता के कारण प्रचलित
कर दी हैं इस प्रकार प्रत्येक रीति का निर्णय करके बुद्धिमानी और
चतुराई के साथ प्रश्नकर्ता को उत्तर देना चाहिये और बात यथार्थ और
वाजबी हो उसे मानना भी उचित है थोथी मूठा ठेली करने और आं
मूंद लट्ठमा मार देने से जड़ता और मूर्खता प्रगट होती है कुछ समय से
इस देश में बिद्यारूपी दीपक की ज्योति मंद हो गई थी इस कारण बुद्धि
पै भी अंधियारी छा गई थी सो अब श्रीयुत अंगरेज़ बहादुर के राज्य में
गुणज्ञ अधिकारियों ने उस बुझते हुए बिद्यारूपी दीपक के सुधारने में अत्यन्त
परिश्रम किया और करते जाते हैं जिस से ज्यों २ प्रकाश फैलता जाता

है त्यों २ अंधेरा भी दूर होता जाता है यद्यपि इस देश में बड़े २ महा प्रतापी राजा महाराजा और बादशाह हो गये परंतु विद्या का ऐसा प्रचार किसी ने भी नहीं किया जैसा कि अखण्ड प्रतापिनी प्रजा हितकारणी श्रीमती विक्टोरिया महारानीजू ने अपनी प्रजा के सुख संपत्ति की वृद्धि हेतु लाखों रुपये लगा के विद्या का प्रबंध किया है जिसके द्वारा थोड़े ही समय में बहुतेरे मनुष्यों को अपने हित अनहित की बातें सूझने लगीं ईश्वर महारानीजू का सदैव अटल राज्य बनाये रहैं स्वामी का यही धर्म है कि अपने आश्रितों के पालन और सुख चैन का सदा ध्यान रक्खें कवि का बचन है ॥

दोहा

मुखिया मुख सो चाहिये खान पान को एक ।
पाले पोषे सकल अंग तुलसी सहित बिवेक ॥

और भी विशेष कर इन दिनों श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तर देशाधिकारी प्रजा हितकारी श्रीयुत सर विलियम म्योर साहिब लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर बिजयी और विद्यातिविज्ञ श्रीयुत ऐम० केम्सन साहिब डैरेक्टर आफ़ पबलिक इनस्ट्रक्शन बहादुर प्रतापी के श्रम और उत्तम प्रबंधों से विद्या और गुण की अत्यन्त वृद्धि हुई और दिनों दिन होती जाती है और पूर्वोक्त गुणज्ञ गुणग्राहक अधिकारियों की गुणग्राहकता ने कवियों के चित्त को ऐसा चाहु बढ़ाया कि नाना प्रकार की सहस्रावधि पुस्तकें विद्या गुण विषय में अति उपकारी बन गईं और बनती जाती हैं जिन से इस देश के निवासियों को अति लाभ होता है और आगे होवेगा ईश्वर ऐसे प्रजा हितकारी सर्वोपकारी गुणज्ञ अधिकारियों की सदैव प्रभुता और ऐश्वर्यता दिन २ बढ़ावे और यश रूपी कली को खिलावे कवि का बचन है ॥

दोहा

सब नर पशु के जगत में होत अनेक लिवाल ।
गयंद और गुणवंत को गाहक गुणी भुवाल ॥

इन दिनों बिचारने से मुझ क्षुद्रबुद्धी को भी कई एक बातें स्वदेशी बंधुओं का कल्याण कारिणी और विशेष लाभ दायनी सूझ पड़ीं उनको कथा के क्रम से जोड़ बनिताबुद्धिप्रकाशिनी नाम यह पुस्तक बनाई इसका जैसा नाम है वैसा ही गुण है इस में संपूर्ण गृहस्ती के चलन व्योहारों का बर्णन आदि अंत पर्यन्त किया गया है जो पुत्री इसके पढ़ने में मन चित्त लगावेगी वह निश्चय उत्तम और चतुर स्त्रियों में मान प्रतिष्ठा पावेगी और अपना और अपनी संतान का कल्याण कर संसार में सुख से जन्म बितावेगी और परलोक में उच्च पद पावेगी ॥

अथ कथा (प्रारंभ)

पुत्री के अनादर और बध का निषेधन

जानना चाहिये कि सरयू के तीर अयोध्या नाम बड़ी पुरानी नगरी है वहां परम कुलीन चतुर प्रवीण केशवदत्त नाम पण्डित रहता था उसकी पतिनी शील गुण संपन्न रूपलावन्यनिधि लीलावती नाम महा पण्डिता थी वे दोनों स्त्री पुरुष बड़े धर्मात्मा और भगवत् भक्ति में तत्पर थे लीलावती सदा प्रेम प्रीति के साथ तन मन से अपने स्वामी की सेवा करती और प्रतिदिन हर्ष आनंद से चित्त भरती सदैव प्रसन्न मुख रहती प्रतिक्षण कोमल और मधुर बचन कहती केशवदत्त बाहर से कैसा ही खेद युत आता पर अपनी पतिनी की सेवा सश्रूषा और मधुर संभाषण से अति सुख पाता और सकल बिषाद चित्त से बिसराता जो २ गुण उत्तम पति-व्रता स्त्रियों में होते हैं वे सब लीलावती में बिद्यमान थे वह प्यारी अपने स्वामी के मन को नित्य ही हाथ में लिये रहती सदा स्वामी की रुचि जान और रुख पहिचान प्रत्येक काम बड़ी सावधानी और स्वच्छता से करती थी कोई भी काम उसका कुढंगा बिदुगने योग्य नहीं होता था जिस पुरुष के घर में ऐसी सुशीला और आज्ञा कारिणी बनिता हो संसार में उसी का जन्म सुफल है कहा भी है ॥

दोहा

सत गुण शील सुधर्म युत पतिसेवक तिय होय ।
तो निश्चय करि राव सम करि है रंक हि सोय ॥
सत गुण विद्या बिन पढ़े नहिं पावत है कोय ।
कहा पुरुष नारी कहा कोई किन ना होय ॥

कुपढ़ स्त्री कैसी ही सुपाच और सुशील हो पर तो भी मूर्खता के कारण कुछ न कुछ स्वभाव में विकार होता ही है उन दोनों स्त्री पुरुषों

का समय सदैव आनंद बिनोद में व्यतीत होता था खेद की चर्चा सुपने में भी पास न आती थी कि कुछ दिन पीछे ईश्वर के अनुग्रह से वह लीलावती अवधानवती होती भई जब नवां मास लगा तब एक दिन लीलावती हर्ष में हो अपने स्वामी केशवदत्त से प्रसन्नता पूर्वक मधुर बचन कहने लगी कि हे प्राणपति, पुत्र और पुत्री एक ही कुक्षा में एक ही आत्मा से उत्पन्न होते हैं इसलिये दोनों बराबर हैं मैं आप से यह प्रार्थना करती हूं कि कदाचित् ईश्वर इच्छा से मेरे कन्या ही उत्पन्न हो तो भी आप अपने चित्त में खेदकर खिन्नमन न होवें पुत्र ही के समान उत्साह मानें यह सुन केशवदत्त उदास हो बोला अहो प्राण-प्यारी पुत्र और पुत्री का हर्ष क्योंकर समान हो सक्ता है कन्या का नाम सुनते ही हृदय धड़कने लगता है और अनेक प्रकार के खटके चित्त में उत्पन्न होते हैं प्रथम तो बिवाह के हेतु बहुत सा धन होना चाहिये दूसरे गांव २ भटक कर उत्तम घर और सुन्दर बर खोजना चाहिये तीसरे कन्या दे उन से आधीन बचन भाषना चाहिये जब कन्या घर में जन्मती है तब ही मान महत अपनी राह लेता है यह सुन लीला-वती हंसके बोली महाराज ऐसी तुच्छ बातों का सोच क्या करते हो ईश्वर सर्वशक्तिमान् है उस पर दृढ़ बिश्वास रखना चाहिये जो ईश्वर कन्या देवेगा वही उसके ब्याह के लिये धन और सुन्दर घर वर देने को सामर्थ है आपको इतनी चिन्ता न करनी चाहिये किसी महात्मा का बचन है ॥

दोहा

प्रभु चिन्ता सब की करें आपुन करिये नाहिं ।
जन्म अगाहू भरत हैं दूध मातु थन मांहि ॥

जो मूढ़, भगवान् का बिश्वास छोड़कर पुत्री उत्पन्न हुए का बिषाद करते हैं वे ही घर बर और धन पाने के लिये अति क्लेश उठाते हैं और अपनी अनदोषी पुत्री के भाग्य को दोष लगाते हैं पर अपनी मूढ़ता पर नहीं पछताते कि हम उस सर्वशक्तिमान् ईश्वर को भूलकर कैसे

भटके २ फिरते हैं और थोड़ी चिन्ता चित्त में करते हैं जिस ने कि इस पुत्री को उत्पन्न किया है उसे क्या इसकी चिन्ता न होगी वह सर्वब्यापी सर्वज्ञ भगवान् सब की सुधि लेता है कीड़ी को कन और हाथी को मन सदैव देता है फिर क्या इस कन्या की सूरत भूल जावेगा हमको केवल अपनी शक्ति भर श्रम और उपाय करना चाहिये देनेवाला तो वही प्राण-दाता देने को सामर्थ है हां आलसी और अबिश्वासी से प्रसन्न नहीं रहता तो भी उसको सक्लेश भोजन् बस्त्र देता है परंतु अपनी सृष्टि में नंगा भूखा किसी को भी नहीं रखता घी वाले को घी और खांड वाले को खांड नित्य ही पहुंचता है ऐसे दीनदयालु को जो कोई बिसराता हैं वह अपने को आप ही बिपत जाल में बझाता है हे प्राणपति जो आप को आधीन बचन भाषने का भय होता है यह भी संदेह थोथा है क्योंकि आधीनता मनुष्यं की प्रतिष्ठा बढ़ाती है और सदा आदर सत्कार कढ़ाती है सज्जन लोग आधीनता में अति उत्तम गुण जानते हैं महात्माओं का बचन है ॥

दोहा

नर की अरु नल नीर की गति एकै करि जोय ।
ज्यों २ नीचो ह्वै चले त्यों २ ऊंचो होय ॥
सुजन बिभो पाये झुकें कुजन पाय इतरायं ।
अम्बा फल भुइ को नमें अंड तनेने जायं ॥

अभिमानी और मूर्ख लोग किसी से झुककर नहीं चला चाहते हैं परंतु ईश्वर को यह बात नहीं सुहाती भगवान् गर्वप्रहारी है जो कोई घमंड करता है उसको अवश्य नीचा दिखाता है घमंडी मनुष्य इस लोक में तुच्छ कहाता है और परलोक में अमित लाज उठाता है मैंने ब्रह्मादि सुर मुनि ऋषियों और महाप्रतापी राजाओं की कन्याओं का वृत्तांत प्राचीन पुस्तकों में देखा और अपने माता पिता के मुख से सुना परंतु यह बात कहीं देखने सुनने में नहीं आई कि कन्या उत्पन्न होने से किसी का मान महत न रहा हो और कोई पुत्री होने से खिन्नमन हुआ हो बरन ब्रह्मा ने सृष्टि की

वृद्धि हेतु बड़ी प्रसन्नता से बहुतसी सुता उत्पन्न करीं और पुत्रियों ही के प्रभाव से राजा दक्ष को प्रजापति की पदवी मिली महाराज बहुधा कन्याओं के कारण लोगों ने बड़प्पन पाया है देखो ब्रह्मा ने अहिल्या के लिये सब देवतों से पृथ्वी की परिक्रमा करवाई और राजा द्रुपद ने द्रोपदी के हेतु कठिन मच्छ पांडवों से बिंधवाया और राजा जनक ने जानकीजू के निमित्त रामचंद्र से कठोर धनुष तुड़वाया जिसका यश आज लों संसार में छाया है इसी प्रकार अनेक राजाओं ने अपना यश कीर्त्ति बढ़ाया है पुत्र से एक कुल की शोभा होती है और पुत्री से दो कुल की प्रतिष्ठा बढ़ाती है परम्परा से कन्या का मान महत चला आता है एक २ पुत्री के लिये सैकड़ों सुर मुनि ऋषि याचना करते थे और सहस्रों महा प्रतापी राजा मुंह फाड़े फिरते थे नेंक भी मान अपमान को नहीं डरते थे देखो अगले समय में कन्या के हेतु स्वयम्बर होता था उस में देश २ के राजा आते थे उन में से एक तो कन्या पाता था और प्रत्येक अपना सा मुंह ले श्री गमा घर जाता था यद्यपि समय की बिपरीतता से बहुधा प्राचीन रीतें नष्ट हो और की और ही प्रचलित हो गई हैं परंतु तो भी इतनी मर्यादा आज तक चली आती है कि दुलहा बरातियों सहित दुलहिन के घर जा व्याह कर बड़े मान महत पूर्वक अपने घर ले जाता है महाराज पुत्री के कारण किसी का अपमान नहीं होता और न किसी को क्लेश उठाने पड़ता है केवल मूढ़ों की मूढ़ता है क्योंकि संसार में न कोई किसी का मित्र है न कोई किसी का शत्रु किंतु अपना ही आत्मा मित्र शत्रु है जो शठ पुत्री को शत्रुभाव से देखते हैं वे ही शत्रुता का फल पाते हैं इसलिये बुद्धिमान् लोग पुत्री का कभी अनादर नहीं करते देखो राजा दक्ष ने अपनी पुत्री सती का अनादर किया था उसके पलटे उसकी ऐसी दुर्दशा हुई कि आज तक सब लोगों पर विदित है मनुस्मृति प्रमाणिक ग्रंथ में लिखा है कि जो मनुष्य स्त्रियों का अनादर करता है और दुखित रखता है वह इस लोक में दारिद्र रोग आदि अनेक आपत्तियों से क्लेशित रहता है और परलोक में नाना प्रकार के दुःसह दुःख सहता है अबला को कभी दुखी न रखना चाहिये और न कभी उसका अनादर और निन्दा करनी उचित है महात्माओं का बचन है ॥

दोहा

नारी निन्दा मति करो नारी नर की खान।
नारी तें नर ऊपजें ध्रुव प्रहलाद समान॥

देखो किसी मनुष्य को आप प्रसन्न हो कोई बस्तु देवें और वह आप की दी हुई बस्तु का अनादर करे तो कहो आप को कैसा बुरा लगेगा और उस पर कैसा क्रोध आवेगा इसी प्रकार जो मनुष्य ईश्वर की दी हुई बस्तु का अनादर करता है उस पर भगवान् का सदा कोप रहता है बहुधा ठाकुर लोग अपने कुल और घराने को उत्तम जान दूसरे को पुत्री देने में हेठी समझते हैं इस हेतु से निर्दई हो अपनी अनदोष पुत्रियों का बध कर डालते हैं परंतु वे महा दुष्ट और दुराचारी अपनी मूर्खता के अभिमान में यह नहीं बिचारते कि इस महा पापकर्म के पलटे हमारी क्या दशा होगी वे दुष्ट यह जानते हैं कि इस कर्म का कोई देखनेहारा नहीं है पर यह ख़बर नहीं कि प्रथम तो समय के राजा से छुपना अति कठिन है और कदाचित् राजा से किसी प्रकार छुपा भी लिया तो उस सर्बशक्तिमान् ईश्वर से क्योंकर छिपावेंगे वह सर्बदर्शी भगवान् सब ठौर विद्यमान है प्रत्येक मनुष्य के किये हुए भले बुरे कामों को भली भांति देखता है और किये कर्मों का फल यथोचित देता है उस से छिपा कर कोई कुछ काम नहीं कर सक्ता क्योंकि वह ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वव्यापी है अपनी सृष्टि की बड़ी सावधानी और चौकसी रखता है धर्मात्मों को सुख और अधर्मियों को दुख देने को सदा उद्यत रहता है सब से अधिक स्त्री और बालक के बध का पाप लिखा है पर इस से भी विशेष कन्या के बध का कहा है जो हत्यारे अनदोष कन्या की हत्या करते हैं वे महा भयानक घोर नरकों में पटके जाते हैं और नाना प्रकार के दारुण दुख पाते हैं तब अपने किये हुए दुष्ट कर्मों की सुधि करके बिलाप करते हैं और सिर धुन २ के हाथ मल २ पश्चात्ताप करते हैं परंतु फिर क्या हो सक्ता है किये हुए कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है यह बात ध्यान देकर बिचारने की है कि मूर्ख लोग लौकिक थोथे ब्योहारों के लिये अभिमानिक पोच बिचार करके कैसा दारुण अपराध कर बैठते हैं और उसके पलटे दोनों लोक में नाना

प्रकार की आपदा उठाते हैं महाराज मैं आप से बारम्बार यह बिनय करती हूं कि संसारी तुच्छ कामों में अभिमान की दृष्टि से लज्जा का भय करके परलोक से अचेत और निर्भय होना उचित नहीं बुद्धिमान् को उचित है कि इस नाशवान् संसार में जगत का भय लाज और रिस सहकर भी जगदीश्वर को प्रसन्न रक्खे क्योंकि उस के अनकूल रहने से शत्रु भी मित्र हो जाते हैं और उसी के प्रतिकूल होने से मित्र भी शत्रुता जानते हैं महात्मा का बचन है॥

चौपाई

मातु मृत्यु पितु शमन समाना सुधा होय विष सुनो सुजाना॥
मित्र करे शत रिपु की करनी देव नदी ता कों बैतरनी॥
जो जगदीश बिमुख सुन भ्राता सब जग ताहि अनल सम ताता॥

इसलिये कहती हूं कि ईश्वर जो कुछ दया कर अपनी इच्छा से दे उसे आदर पूर्वक लेना चाहिये कभी उदास हो अनादर करना उचित नहीं केशवदत्त अपनी पतिनी के मनोहर बचन सुन प्रसन्न हो बोला कि तुम्हारे अमृतरूपी बचन सुन मेरे हृदय का संशय रूपी बिष दूर होगया केशवदत्त जो सोहड़ की सामिग्री इस दुबिधा से पहिले नहीं लाता था कि न जाने पुत्र होगा वा पुत्री इस संदेह को छोड़ बड़े हर्ष आनन्द से प्रत्येक चाहती बस्तु लाने लगा और अनेक प्रकार की सामिग्री का संचय कर मन का अति हर्ष जनाने लगा यह देख लीलावती ने जाना कि स्वामी अति धन व्यय करने की इच्छा रखते हैं तब तो हाथ जोड़ बिनय सहित बोली महाराज उत्साह शब्द का वैसा अर्थ न समझना चाहिये जैसा अचेत बनिक ने समझा था केशवदत्त बोला यह कैसे लीलावती ने कहा॥

जन्म आदि उत्सव में व्यय का निषेध

कि शिवराजपुर में एक शिवदीन बैस्य रहता था उसके सुचेत और अचेत दो पुत्र थे मरती बेर शिवदीन ने दोनों पुत्रों को समान धन दे कर कहा कि हे बेटो पगड़ी रखकर घी खाना मेरे पीछे लोगों को मत

हंसाना वह यह कहकर इस नाशवान् संसार को छोड़ परलोक को सिधारा. इस पीछे उसके पुत्रों ने दशवां एकादशा तेरहीं आदि सब क्रिया कर्म यथा योग्य किये और चौदहें दिन अपने पिता के मृतक कर्मों से निवृत्त हो दोनों भाई अपने २ हल उद्यम में लगे सुचेत अपने पिता के बचन का अर्थ सूधा और ठीक समझा था उसी के अनुसार बड़ी सावधानी और चोकसी से चलता था जो कुछ उसे प्राप्ति होती थी उसे इस ढब से ख़र्च करता कि कुछ न कुछ बचाता ही रहता था परंतु अचेत उस वाक्य का उलटा अर्थ समझा था इस कारण अपनी प्राप्ति देख व्यय नहीं करता था आंख मूंद अंधा धुंध उठान उठाता था वह सच मुच खाने को ऊंट कमाने को मुर्गी था बरसवें दिन पिता का बर्षी का दिन आ पहुंचा सुचेत ने अचेत से कहा भाई समय बहुत बिगड़ रहा है कार्य में समझ सोच के यथा शक्ति ब्यय करना उचित है यह बात सुन अचेत रिस हो बोला अरे ऐसा क्या कहते हो समय तो सदा बिगड़ता ही सुधरता रहेगा परंतु पिता की बरसी का दिन फिर २ नहीं आवेगा जो तुम से न बन पड़े तो चुप हो बैठो मैं सब कर लूंगा सुचेत तो बड़ा बुद्धिमान् था समय का रूप देख कान में तेल डाल चुप साधि बैठा और अचेत ने बाप की बरसी धूम धाम से कर अपना सब धन गवां बैठा अकाल तो पड़ ही रहा था थोड़े ही दिनों में भूखों मरने की दशा आ पहुंची तो भी अचेत ने घृत खाना नहीं छोड़ा एक दिन पगड़ी भी गहने धर खाई तब सुचेत से कहा भाई आज पिता का बचन मैंने पूरा किया कि पगड़ी रखके घी खाया परंतु भोर के लिये कुछ नहीं दीख पड़ता है सुचेत ने कहा अरे भाई तुमने बड़ी मूर्खता करी उस वाक्य का यह अर्थ न था कि पाग गहने धर घी खावे किन्तु सिर पै रखकर घी खाना चाहिये था यह सुन अचेत अपनी मूढ़ता पर अति पछतावा कर ढाढ़ मार रोने लगा तब सुचेत ने कंठ से लगा कहा कि अब रोने से क्या होता है बहुधा मूर्ख लोग अपने पुरषों के वाक्य और व्यौहारों का अर्थ और प्रयोजन ठीक न समझकर कुछ का कुछ करने लगते हैं और उनको वृथा दोष लगवाते हैं जो होनाथा सो हुआ अब धीर्य बांधो घबराओ मत जो कुछ रूखा सूखा मेरे चोके में हो सो पहिले ख़ुशी से तुम खा लिया करो पीछे

में खाऊंगा यह सुन अचेत को ख़ातिरी हुई कहा है कि बंधु वही है जो बिपति में बंधु की सहायता करे वह बंधु नहीं जो सहायता करने के पलटे उरहना देने को उद्यत हो इतनी कथा कह लीलावती बोली कि उत्साह शब्द से मेरा मनोरथ यह नहीं है कि हर्ष में आके घर का सब धन लुटा दो जो मनुष्य बेबिचारे अति व्यय करता है वह शीघ्र ही दरिद्रता के फंदे में फंसकर अति दुख पाता है और नाना प्रकार के क्लेश उठाता है महाराज धन बड़ी कठिनता से मिलता है इसको बिचार के साथ ऐसे कामों में उठाना चाहिये जिन से उत्तम फल की आसा हो थोथे कामों में लगाके बृथा नष्ट करना उचित नहीं बहुधा लोग जन्म पसनी मुंडन कनछेदन आदि अनेक ओसरों में अधिक व्यय कर बड़ी धूम धाम से उत्साह मानते हैं परंतु पण्डित और बुद्धिमान् लोग उनकी प्रशंसा नहीं करते क्योंकि वे लोग हर्ष में आ ऊसर में बीज बोके गांठ का भी गवांते हैं बुद्धिमान् लोग यज्ञोपवीत और बिवाह आदि बड़े ओसरों से भी विद्या प्रारंभ का ओसर बड़ा समझते हैं क्योंकि यह अति उत्तम खेत है इस में जैसा बढ़िया बीज बोया जाता है वैसा ही अधिक फल दिखाता है जितना धन इस खेती करने में ख़र्च पड़ता है उस से पकने पर हज़ारों गुना बढ़ता है केशवदत्त अपनी पतिनी के बुद्धिमानी के सुन्दर बचन सुन अति हर्षित हुआ और मन में बड़ी प्रशंसा करके कहने लगा कि तुम बहुत ठीक कहती हो अति व्यय निश्चय कर दुःख ही का मूल है तुम्हारी हितकारी सम्मति अनुसार संपूर्ण काम करूंगा तुम कुछ चिन्ता न मानो ॥

पुत्री शिक्षा की आवश्यकता

इस उपरांत वह दिन आपहुंचा और ईश्वर इच्छा से लीलावती के कन्या ही उत्पन्न हुई केशवदत्त ने सुनके नेंक भी मन मैला न किया अति प्रसन्न हो बधावा बजवाया और चरुवा छटी दसठौन आदि सब जन्म ओसरों को मुदित मन से हर्ष पूर्वक किया और यथा शक्ति सब को दिया लिया पुरोहित ने बिचार के उस कन्या का कलावती नाम धरा वह पुत्री चंद्रमा की कला के समान अति सुन्दर स्वरूपवान् थी और

भागमानी उसके माथे पर झलकती थी लीलावती मासिक स्नान कर अपने घर गृहस्त्री का काम धंधा करने लगी और अपनी प्यारी पुत्री का स्वभाव जन्म से ही सुधारने लगी कलावती तीन वर्ष की भी न हुई थी कि उसकी मा ने उसे वर्णमाला के अक्षरों को अच्छे प्रकार चिन्हवा दिया और छोटे २ शब्दों का शुद्ध उच्चारणसिखाने लगी पांचवें बरस में छोटीसी पुस्तक का प्रारंभ करवा दिया एक दिन लीलावती की पड़ोसिन आई और कलावती को पढ़ते देख हंसके यों कहने लगी इसको पढ़ा लिखा के क्या नौकरी चाकरी कराने का मंसूबा है लीलावती बोली कि हे बहिन ऐसी क्या कहती हो विद्या केवल नौकरी ही के लिये नहीं पढ़ाई जाती है किन्तु मन की शुद्धता और बुद्धि की चमत्कारी हेतु विद्या अभ्यास कराना अति अवश्य है क्योंकि बुद्धि खानि से निकले हुए हीरे के समान है जब तक शास्त्र रूपी सान से नहीं मांजी जाती तब तक प्रकाशवान् नहीं होती किसी कवि का बचन है ॥

दोहा

हीरा आप धरे नहीं जब लग चढ़े न सान ।
विद्या से मांजे बिना बुद्धि गहे नहिं ज्ञान ॥

बिना पढ़ा मनुष्य पशु के समान होता है इसलिये माता पिता को उचित है कि अपनी सुन्दर तनधारी संतान को कुपढ़ रख पशु तुल्य बना दोष भागी न होवें और भी पुत्री को विशेष कर अवश्य पढ़ाना चाहिये क्योंकि उसको दूसरे घर जाना होता है जो वह पढ़ी लिखी हुई तो अपनी मधुरता और गंभीरता से सास ससुर आदि घर के सब लोगों को प्रसन्न रक्खेगी और आप भी प्रसन्नचित्त रहेगी गृहस्ती का प्रत्येक काम स्वच्छ और सावधानी से कर सकेगी उसकी चतुराई देख प्रत्येक मनुष्य का चित्त हर्षित रहेगा ऐसी सुशील कन्या से माता पिता भी प्रशंसा योग्य ठहरते हैं और जो कन्या मूर्ख हुई तो वह आप नाना प्रकार के क्लेश उठाती है और अपने मा बाप को भी सैकड़ों गालियां दिवाती है और घर के प्रत्येक मनुष्य के चित्त को खेद पहुंचाती है दूसरे पढ़ी हुई स्त्री जन्म से ही अपनी संतान को पढ़ने की टेव कराती

है उसकी संतान अनायास कुछ न कुछ पढ़ ही जाती है परंतु मूर्ख स्त्रियों की संतान की शिक्षा पराधीन होती है जो बनी तो बनी और न बनी तो न बनी क्योंकि संतान की डाह पीर जितनी माता को होती है उतनी पिता को भी नहीं होती फिर दूसरे लोगों की क्या गिनती है· तीसरे जब स्त्री का पुरुष उद्योग के लिये बिदेश को चला जाता है तब बिरहनी कहाती है और पिय के बियोग से उसका समय अति कठिनाई से व्यतीत होता है और सदैव चित्त को खेद रहता है परंतु जो विद्वान् होती हैं वे अपने कठिन समय को पढ़ने लिखने और उत्तम पुस्तकें देखने में सहज ही काटडालती हैं और धर्म अधर्म से भेदू होने के कारण उनके मन में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न नहीं होता वें अपने मन को ज्ञान के अंकुश से सदा बश में रखती हैं कवि का बचन है ॥

दोहा

मन मदांध हाथी भयो ज्ञान महावत कीन ।
ज्यों २ चले कुपंथ में त्यों २ अंकुश दीन ॥

पढ़ी हुई स्त्रियां पत्री के द्वारा अपने मन के गुप्त वृत्तान्त को पति पर प्रगट कर देती हैं और पति के मन की बात को आप जान लेती हैं और पति के हाथ की पाती पढ़ अपनी छाती जुड़ाती हैं किसी का बचन है ॥

दोहा

पाती आधो मिलन है रहे दरशन की प्यास ।
बांचत ही सुख ऊपजे बहुर मिलन की आस ॥

जो स्त्री पुरुष पढ़े लिखे होते हैं वे मन माना एक दूसरे को लिख भेजते हैं और इसी तरह अपनी बिरह की अग्नि को बुझाते हैं उनकी बात तीसरे मनुष्य पर प्रगट नहीं होती परंतु मूर्ख स्त्री अपने मन की मन ही में जला करती है और अपने दुख का वृत्तान्त स्वामी पर प्रगट नहीं कर सक्ती जब कभी कोई लिखनेहारा मिल गया तो दो चार

बातें वे ही लिखा पठाती है जो कि औरों से कहने योग्य होती हैं परंतु गुप्त प्रयोजन को किसी तरह नहीं लिखा सक्ती हैं कदाचित् मूर्खता के हेतु कुछ लिखा बैठी तो उसका स्वामी पढ़ कर क्रोधित होता है दूसरे लिखनेहारा आप मन में हंस अपने इष्ट मीतों से कहके हंसी कराता है ऐसी दशा में मूर्ख स्त्री की बड़ी नाककटई और मरन होता है और जब वह इस भूल को मन में बिचारती है तब पछतावा कर चित्त में अत्यन्त खेद पाती है तिस पर भी वैसी पाती नहीं लिखा सकती जैसी कि प्रेम भरी पत्री अपने प्राणपति को लिखनी चाहिये किसी का बचन है ॥

दोहा

कागज़ थोड़ो हित घनो क्योंकर लिखों बनाय ।
सागर में जल बहुत है गागर में न समाय ॥

जिसका जिस से नेह लगा है वही उस गुप्त प्रेम को ज्यों का त्यों दरसा सक्ता है मजूरों खेती नहीं होती यह सुन पड़ोसिन बोली बहिन तुमने सब बातें यथार्थ कहीं इन में तनिक भी फेर नहीं है परंतु मैं क्या करूं जरे यह मेरा स्वभाव ऐसा बुरा है कि लड़का भी कुपढ़ रहा जाता है क्योंकि कभी पढ़ने जाता है कभी नहीं एक दिन उसके बाप ने इसी कारण मारा तब मैं ने अज्ञानता के कारण रिस हो कर कहा कि क्यों मेरे लड़के को मारे डालते हो तुम्हारा पढ़ाना लिखाना भाड़ पड़ो मेरा कुपढ़ ही रहने देवो जो जिये जागेगा तो अपनी मेहनत मजूरी करही खावेगा तुम इसे हर घड़ी मारा पीटा मत करो यह सुन उन्हों ने कहा अरी तू ने इसका जन्म नष्ट किया तेरे ही मारे यह बिगड़ गया है अब मैं इस से कभी पढ़ने के लिये न कहूंगा यह कह उन्हों ने ऐंड़ छोड़ दी तब से वह और भी बिगड़ गया है मैं क्या करूं मुझ में दया अधिक है उसके मारे कुछ नहीं बनने पाता यह सुन लीलावती बोली बहिन पढ़ाने में दया करना न चाहिये जैसे फोड़ा चिराने को बालक रोता है परंतु माता निर्दय हो उसको चिरवाही डालती है क्योंकि उसके चिराने ही में वह अपने बालक का सुख समझती है इसी तरह पढ़ाने

में भी विचारना चाहिये बालक का खाने पीने का लाड़ करे पर पढ़ाने लिखाने में दुलार करना अच्छा नहीं क्योंकि वह दुलार नहीं है किन्तु उसके जन्म का बिगाड़ है लड़कों के रोने पर हर बात में दया न करनी चाहिये क्योंकि वे अनसमझ अपना हित अनहित कुछ नहीं समझते मुंह धुआने काजल लगवाने आदि नेक नेक सी बातों में रोने मचलने लगते हैं उनके रोने पर कहां २ दया करी जावे जो बालक बालकपन में विद्या सीखने के लिये क्लेश नहीं उठाता है वह मूर्खता के कारण जन्म भर दुख पाता है और बड़े होने पर अपने गये समय पर पछतावा करके माता पिता को दोष लगाता है माता पिता का धर्म है कि बालक को उत्तम गुण सिखाने में और स्वभाव सुधारने में ताड़ना को बुरा न समझे बरन दया को बुरा जाने पण्डित लोग मूर्ख पुत्र होने से न होना ही अच्छा जानते हैं क्योंकि न होने से एक और मूर्ख से अनेक दुख होते हैं विद्याहीन ईश्वर के पहिचानने में असक्ति होता है विद्या बिनय देती है बिनय से योग्यता होती है योग्यता से धन मिलता है धन से धर्म और धर्म से सुख होता है रूप यौवन संपन्न बड़े कुल में उत्पन्न होने से भी विद्याहीन मनुष्य शोभा नहीं पाता जैसे सुगंध रहित पलास का फूल जो मूढ़ अपनी संतान को लोक पर लोक की सुखदाता विद्या के आभूषण से बिभूषित नहीं करता है वह महा दोष भागी हो अति क्लेश में पड़ता है पड़ोसिन यह सुन अति लज्जित हुई और लीलावती की सरहना कर कहने लगी कि तुम धन्य हो २ मैं मूर्खिणी विद्या के गुण से भेदू न थी इस हेतु अपने प्यारे पुत्र को भी मूर्ख ही रखना भला जानती थी अब आप के अमृत रूपी बचन सुनकर मेरी अज्ञान रूपी मूर्छा जग गई यों कह प्रशंसा करती हुई अपने घर गई और तुरंत नौकर से कहा कि इस लड़के को पाठशाला में लेजा पाठक को सोंप आओ वह उसे पकड़के पाठशाला को ले चला तब वह लड़का बहुत कुछ रोया चिल्लाया परंतु उसकी मा ने दया न करके नौकर से कहा यह जैसे जावे वैसे इसे नित्य पाठशाला में कर आया करो इसके रोने चिल्लाने पर कभी ध्यान मत दिया करो इस प्रकार दो चार दिन करने से उस बालक ने अपना हठ छोड़ दिया और फिर

आप ही हंसी खुशी से पाठशाला में जाने लगा कहा है कि (कुछ दिन करो उपाव फिर पड़ जाय स्वभाव) मन की प्रकृति पानी की धार के समान होती है श्रम कर जिधर को फेरना चाहो उधरी ही को फिर जाती है इसलिये माता पिता को चाहिये कि अपने बालक का हठ छुड़ाने में कभी दया न करें लीलावती अपनी पुत्री के पढ़ाने लिखाने और उत्तम गुण सिखाने पर अत्यन्त ध्यान रखती थी और स्त्री धर्म का उत्तम २ पुस्तकें पढ़ाती थी प्रत्येक शब्द का अर्थ और व्योरा अच्छे प्रकार समझाती थी वह सुशील कन्या भी मन चित्त दे समझती और कंठ कर लेती थी॥

छोटी अवस्था में ब्याह का निषेध

जब कलावती को सातवां बर्ष लगा तब केशवदत्त ने उसके बिवाह की चिंता कर लीलावती से कहा कि इस साल में पुत्री का ब्याह करना अवश्य है क्योंकि सात बर्ष की कन्या के ब्याह का पुन्य अधिक कहा है लीलावती ने कहा जैसी आप की इच्छा हो वैसा करो परंतु ऐसा न हो कि अधिक पुन्य के पलटे बिशेष पाप हो रहे क्योंकि अभी पुत्री बहुत छोटी है इसके लियें बर भी छोटा ही ढूंढ़ा जावेगा और छोटी अवस्था में बालकों के गुण अपगुण का ठीक २ निश्चय नहीं हो सक्ता है क्योंकि सोलह सत्तरह बर्ष की अवस्था तक बालक के स्वभाव में दृढ़ता नहीं आती है संयोग से जैसी ही उत्तम मध्यम संगत में पड़ जाता है वैसा ही गुण उसकी प्रकृति में आजाता है जैसे मांटी का सुंदर खिलौना जब तक नहीं सूखता है तब तक उसके बिगड़ने का डर ही रहता है ऐसे हा बालक के स्वभाव को भी जानना चाहिये जो लोग बिना बिचारे अपनी छोटी अवस्था की पुत्री का ब्याह कर देते हैं वे बहुधा गंगाप्रसाद दीक्षित की नाईं धोखा खाते हैं और पछताया कर चित्त में अति खेद पाते हैं केशवदत्त बोला यह कैसे लीलावती ने कहा॥

कि जमुना के तीर इटावा नाम एक बस्ती है उस में गंगाप्रसाद नाम दीक्षित रहता था उसने अपनी सात बर्ष की कन्या फूलवती का ब्याह करना बिचार नाईं नेगियों को बर खोजने को भेजा वे लोग

ढूंढते २ बटेश्वर नगर में पहुंचे वहां बड़ा धनी और अति कुलीन मोहनलाल बाजपेयी रहता था उसके एक दस ग्यारह बरस का अति सुन्दर और शील गुण संपन्न उजागरलाल नाम का लड़का था नेगी लोग उसे देख अति प्रसन्न हुए और मोहनलाल से बात चीत कर लौट के गंगाप्रसाद के पास पहुंचे और सब वृत्तान्त कह सुनाया गंगाप्रसाद सुनके अति प्रसन्न हुआ और कुछ दिन पीछे आप खुद बटेश्वर गया और लड़के का पढ़ना लिखना देख आया इस पीछे मोहनलाल की मुंह मांगी दक्षिणा दे फूलवती का बिवाह कर दिया उस समय तो उजागर लाल सच्चा मुच्चा उजागरलाल ही था कोई क्या जानता था कि बड़े होने पर कुसंगत में पड़ अंधागरलाल हो जावेगा और घर का धन सब धूल में मिलावेगा और अपने बाप दादे के नाम को बट्टा लगावेगा ॥

ब्याह होने के थोड़े ही दिन पीछे मोहनलाल का पीछा हो गया तब लुंगाड़ों ने छोटा लड़का देख उसके धन पर दांत लगाया इन लोगों ने पहिले उजागर के घर आने जाने का डौल लगाया और फिर कपट रूपी बिश्वास और प्रेम का जाल बिछाया प्रत्येक काम में उजागर को सहायता देते और सब प्रकार उसकी ख़ातिर खुशामद करते थोड़े ही दिनों में कपट की फांसी में उजागर को फांस ऐसा हिलाया कि उनके बिना उजागर को घर में कल न पड़ती थी वह यही जानता था कि यह लोग मेरे बड़े हितकारी हैं उजागर की माता भी उनका कपट रूपी प्रेम देख यही जानती थी कि मेरे पुत्र को छोटा जान यह सब जने दया कर अति प्रीति मानते हैं इस धोखे में उनके साथ बैठने उठने से उजागर को नहीं रोकती थी उन कुमार्गियों ने क्रम २ से उजागर को जुए का चसका लगाया और पढ़ना लिखना छुड़ा के पक्का जुआरी बनाया यहां तक कि सैकड़ों रुपये घर में से चुरा के लेजाने लगा और छिन भर में गमा गमू हाथ झाड़ घर आने लगा उन ठगों ने कुछ रुपया तो पहिले ही उजागर की मा से उधार के मिष ले लिया था और कुछ उजागर को ब्योपार के बहाने से दिवाकर बरबाद किया था बाक़ी रहे सहे को चोरी से मंगवाने लगे जब उसकी मा ने जाना कि रुपया चोरी गया तब वह बड़ा वायवेला करने लगी और थाने में रपट लिखाने

को उद्यत हुई यह सुन वे ठग आये और उन्हों ने नाना प्रकार के भय दिखाये कि जो धन चोरी गया है वह अब तुमको मिलना कठिन है रपट लिखा के खिंची २ और भी फिरोगी और अपनी बात दो कौड़ी की करोगी अब इन बूंदो दर्शन कहां कुठला धोके कीच उठाना है सांप तो निकल गया अब पीसन कूटे क्या फ़ायदा वह बिचारी डरौनी बातें सुन पेट मलोला दे चुप हो बैठ रही ॥

ब्याह से यह तीसरी बरस थी महूर्त पूछ उजागर का गौना लिया जो गंगाप्रसाद ने अपनी पुत्री को गहना बनवा दिया था वह सब उजागर ने मार्ग ही में हाथ किया और घर आते ही उन धूर्त्तों के संग जुए में हार गया उजागर ने अपनी मा के नथनों प्रान कर दिये थे सूखकर लकड़ी हो गई थी गंगाप्रसाद की पुत्री विद्वान् और बड़ी चतुर थी घर की दशा देख मन में बिचारने लगी कि जब मैं ब्याह में आई थी तब तो और ही चमत्कारी दीख पड़ती थी अब तो भरम भारी और पिटारा खाली दीखता है न जानूं क्या हो गया भेद भाव लेने से जाना कि कुसंगत में पड़ स्वामी ने घर का खोज मार दिया सब बातों से भेदू हो बिचार किया कि अभी से कुछ यत्न किया जावे तो अच्छा है नहीं तो भीख मांगने की दशा निकट आते बार नहीं यह सोच एक पत्री अपनी माता को लिखकर भेजी ॥

सिद्धिश्री इटावा शुभस्थाने सर्वोपमा योग्य सकल सत् गुण खान जीवन प्रान श्रीमती माता सत्यवती जू योग्य लिखी वटेश्वर से सेवकी फूलवती की अनेक प्रणाम बंचने यहां कुशल है आप की और पिता जू की कुशल क्षेम प्रति दिन ईश्वर से चाहती हूं आगे समाचार यह है कि यहां का वृत्तान्त लिखा जाता नहीं और लिखे बिन रहा जाता नहीं ताता दूध पीने का न उगलने का कठिन दशा में पड़ी हूं क्योंकि मुझको दुखी सुखी इसी घर से काम है माता पिता जन्म दे कर्म के साथी नहीं होते इसलिये घर का भेद आप से कहना उचित नहीं जानती हूं परंतु छुपाने से और भी अधिक हानि सूझ पड़ती है इसलिये प्रार्थना करती हूं कि मेरी मूर्खता पर क्षमा कीजियो और पत्री देखते ही पिता जू को शीघ्र भेज दीजियो यहां धूर्त्तों ने घर का धन सब मूस खाया है और प्राणपति को मूर्खता क

फांस में फंसाया है जो उन से छुटाते बने तो आकर बेग छुड़ावें नहीं तो यहां इतिश्री हो चुकी थोड़े में बहुत जानियो और मेरा हित बिचार उत्तम उपाय ठानियो आगे शुभ मिती आश्विन सुदी ५ सम्वत् १६२० ॥

यह चिट्ठी जब सत्यवती के पास पहुंची वृत्तान्त पढ़ अति व्याकुल हो पति से कहने लगी कि छोटी अवस्था में जो पुत्री का ब्याह किया उसका यह फल है गंगाप्रसाद पत्री पढ़ते ही शोकसागर में डूब गया उसकी दशा देख सत्यवती बोली कि होनी थी सो तो हो चुकी अब धैर्य की फेंट बांध आगे का बिचार करना उचित है कवि का बचन है ॥

दोहा

बीती ताहि बिसार दो आगे की सुधि लेउ ।
जो बन आवे सहज में ताही में चित देउ ॥

सत्यवती के नीति युक्त बचन सुन गंगाप्रसाद चेत में आया और तुरंत ही बटेश्वर को प्रस्थान कर दिया वहां पहुंच क्या देखता है कि उजागर ने घर का चौपटा कर दिया तो भी उन कुवृत्तियों का संग नहीं छोड़ता गंगाप्रसाद ने मन में बिचारा कि अभी तो उपाय करने से इस लड़के का स्वभाव सुधरना सम्भव है परंतु चार छः बरस पीछे प्रकृति परिपक्क हो जावेगी फिर सुधरना कठिन होगा कवि का बचन है ॥

दोहा

हरी लकड़िया की छड़ी ज्यों नमाउ नम जाय ।
सूखे से फिर ना लचे करें अनेक उपाय ॥

इसलिये अभी अपने साथ घर लेचलूं यह सोच उजागर को बुलवा पेट से लगा के कहा बेटा कुसंगत से तुमने लाख का घर खाक कर दिया और बाप दादे के नाम का कुछ बिचार न किया हे तात नीचों की संगतसे मति नीच ही होती है और समान लोगों के समागम से समानता पाता है और बड़ों के सत्संग से बुद्धि सदा वृद्धि होती है कवि का बचन है ॥

दोहा

सहज सुसंगत होत सुख , दुःख कुसंग स्थान ।
गंधी और लुहार की देखो बैठ दुकान ॥
संगत ही गुन ऊपजे संगत ही गुन जाय ।
बांस फांस और मीसरी एक ही भाव विकाय ॥

बेटा दुष्टों के से सब चरित्र मसा करता है सन्मुख पांवों पर गिरता कान के निकट मधुर शब्द होले २ करता छेद को ढूंढ निःशंक है। घुस पीठ का मांस खाता है दूसरे दुष्टों की यह रहन है कि दूर से देख आसन छोड़ हाथ उठाना समीप आने पर खूब लिपट के मिलना कुशल प्रश्न के पूछने में अति आदर देना आंखों में आंसू भर लेना ऊपर मधुर बचन कहना पेट में विष भरे रहना दुष्टों की अद्भुत नाटक विधि है इनके धोखे में चतुर लोग नहीं आते कवि का बचन है ॥

दोहा

ऊपर दीखे सुमिल सो भीतर अनमिल आंक ।
कपटी जन की प्रीति है , खीरा कीसी फांक ॥

सो पुत्र अब तुम इन ठगों की संगत छोड़ मेरे साथ चलो उजागर अपने ससुर के बचन सुन लज्जित हो रोने लगा गंगाप्रसाद ने कंठ से लगा धैर्य बंधाया और गहरी सांस भर के कहा अरे दुष्टो तुमने यह क्या पाप कर्म किया मधुर बचन से बतियाये गयों को और मिथ्योपचार से बस किये गयों को अर्थियों को बिश्वासियों को और शुद्ध चित्तवालों को क्या ठगना चाहिये जो छली इन से छल करते हैं वे अंत समय महा भयानक नरकों में पड़ते हैं गंगाप्रसाद ने निज मन का परितोष कर उजागर का और उसकी मा का प्रबोध किया और अपनी पुत्री यामात्र को ले घर लौट आया और पढ़ाने में श्रम कर शीघ्र ही पण्डित बनाया और समझाया कि दुर्जन प्रियवादी है यह उसके विश्वास का कारण नहीं मुख में मधु और हृदय में हलाहल बिष भरा रहता है और भी परोक्ष में कार्यनाशक और प्रत्यक्ष में प्रियवादी ऐसे मित्र से

जो पयोमुख विष के घड़े के समान है सदैव बचना चाहिये और ओछी संगत त्याग सदा उत्तम का सेवन कीजिये कवि का बचन है ॥

दोहा

संगत कीजे साधु की हरे और की ब्याधि।
ओछी संगत नीच की आठों पहर उपाधि ॥
पारस संगत पाय के लोहा कंचन होत।
ता सम संगत चतुर की छिन में करत उदोत ॥

इस प्रकार उपदेश कर उजागरलाल का मन निर्विकार किया इतनी कथा कह लीलावती बोली कि छोटी अवस्था में पुत्री का व्याह करना भला नहीं समझती हूं केशवदत्त का भी हृदय कम्पायमान हुआ कहने लगा कि प्यारी तुम्हारी सम्मति मेरे मन भाई लीलावती यह सुन प्रसन्न हो कलावती की शिक्षा में प्रवृत्ति हुई जब वह कन्या अच्छे प्रकार लिखने पढ़ने में प्रवीन हो गई तब सीना पुरोहना कसीदा आदि सिखाया यह गुण भी स्त्रियों के लिये अति उपयोगी है इस काम को जाननेहारी दरिद्रता की दशा में भी दासी कर्म अर्थात् चौका बासन पीसना आदि टहलों से बचती है किन्तु उत्तम काम में इतना पैदा कर सक्ती है कि एक के पलटे चाहो दो टहलुई लगा सके और समय कुसमय अपना पेट पालन भी कर सक्ती है इसके उपरान्त नाना प्रकार के भोजन बनाने की रीतें बताईं और गाना बजाना धरा उठाई आदि संपूर्ण गृहस्ती के कामों में चतुर बनाई कलावती घर का प्रत्येक काम बड़ी सावधानी और स्वच्छता से करने लगी अपने माता पिता को सदा प्रसन्न रखती और आप भी प्रसन्न चित्त रहती एकादशी आदि व्रत करती और सदा ईश्वर का ध्यान मन में धरती कभी किसी से कठोर और करकस बचन न कहती गारी आदि बुरे गीतों से अति घिन करती भगवान् के गुणानुवाद को बड़े प्रेम से गाती लीलावता उसके सत् गुण देख मन में विचारने लगी कि अब तो यह कन्या सुसराल में भी प्रत्येक काम चतुराई के साथ कर सकेगी न घर के लोगों का मांथा पचावेगा

में आप खेद पावेगी सदा अपनी सराहना कराके मा बाप की भी प्रशंसा करावेगी और अब यह ग्यारहवां बरस में भी है इसलिये इस वर्ष में व्याह हो जावे तो अति उत्तम है यह सोच एक दिन केशवदत्त से कहा कि अब कलावती के व्याह करने में कुछ बिगाड नहीं देखती हूं जो आप की इच्छा हो और उचित जानो तो बर खोजने की चिन्ता कीजिये केशवदत्त बोला भली कही मेरे मन में भी यही थी यह सुन लीलावती बोली ॥

बर खोजने की और बर्ग प्रीति मिलाने की रीति

महाराज एक बिनय और भी ध्यान देके सुन लीजिये उत्तम कुल वृक्ष के समान है और संपति पालों के सदृश है और पुत्र मूल के तुल्य है यद्यपि सब लोग अपनी पुत्रियों को ऐसी जगह किया चाहते हैं कि सदा सुख में रहें परंतु सुख के तत्व को नहीं बिचारते अर्थात् पेड़ और पालों को देखते हैं और मूल पर कुछ ध्यान नहीं करते परंतु मेरी समझ में मूल ही को मुख्य देखना उचित है क्योंकि मूल दृढ़ होगा तो बड़ी प्रचंड पवन के झकोरों से भी वृक्ष को गिरनें न देगा और मूल बोदा हुआ तो थोड़े ही झटके में पेड़ गिर पड़ेगा इसी प्रकार जो लड़का सपूत हुआ तो धन और कुल को दिन २ बढ़ावेगा और बाप दादों का नाम चलावेगा औ जो कपूत हुआ तो सब को धूल में मिलावेगा इसलिये मेरी मति यह है कि धन कुल रूप आदि की अपेक्षा लड़के के गुण शील आदि का बिशेष ध्यान रखना योग्य है और जहां तक सम्भव हो बर कन्या की प्रकृति एकसी होनी चाहिये यह भी सुख का कारण है कवि का बचन है ॥

दोहा

प्रकृति मिले मन मिलत है अनमिल ते न मिलाय ।
दूध दही से जमत है कांजी से फट जाय ॥

और भी धन बादल की छांईं के समान और सुंदर रूप पतंग के रंग सदृश और कुल केवल नाम के लिये है यह तीनों सुख का हेतु

नहीं है इन्हें देख जो कन्या दे सुख चाहते हैं वे बहुधा खेद पाते हैं और पछताते हैं ऐसे चतुराई के वचन सुनके केशवदत्त प्रसन्न हो बोला तुम्हारी प्रत्येक बात यथार्थ है अब मैं धोखा न खाऊंगा तुम निःशंक रहो यह कह पुरोहित और नाई आदि बुला अच्छे प्रकार समझाय बुझाय कलावती के लिये बर खोजने को भेजे वे लोग ढूंढते २ नीमसार में पहुंचे वहां धनाढ्य और महापण्डित रामसेवक बाजपेयी रहता था उसके एक अति सुंदर बिचक्षण पुत्र कृष्णदत्त नाम था यद्यपि उस लड़के के व्याह पांच छः बरस की अवस्था ही से अनेक आने लगे और रुपये का लोभ दिखाने लगे थे परंतु उस अग्र सोची पण्डित ने यह बिचार अंगीकार नहीं किया था कि छोटी अवस्था में बालकों के गुण दोष का कुछ ठीक निश्चय नहीं हो सक्ता कदाचित् पुत्र मूर्ख निकल गया तो धोखे में पराई जाई का गला कट जावेगा इसलियें धन के लोभ में फंस ऐसा कर्म करना उचित नहीं जिस में चित्त को खेद का संदेह हो उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि जब तक यह पुत्र पढ़ गुन प्रवीन न होगा तब तक कभी इसका व्याह न करूंगा क्योंकि जो अबिवेकता के कारण पुत्री को क्लेश होवे तो दोनों पक्ष के मुखिया ही नरकभागी होते हैं बहुधा पुत्री वाला उत्तम कुल और धनाढ्य घर का लोभ करता है और पुत्रवाला धन के लालच में पड़ता है दोनों के दोनो मोह में फंस मूर्ख बन जाते हैं उन्हें यह ज्ञान नहीं रहता कि लोभ पाप का मूल है जो कहीं पुत्र मूर्ख निकल गया तो पुत्री को अवश्य दुख भोगना पड़ेगा और इस दुख के मूल कारण वे ही लोग ठहरेंगे जिन्हों ने लोभ में आकर पुत्र कन्या के गुण दोष का अच्छे प्रकार बिचार नहीं किया इसलिये वे ही लोग ईश्वर के सन्मुख अपराधी समझे जाते हैं और अपनी अबिवेता से किये कर्म का फल भली भांति लोक परलोक में पाते हैं सो मुझको जान बूझ धन के लोभ में आ अनुचित काम करना योग्य नहीं कवि का बचन है ॥

दोहा

अति अनीति लहिये न धन जो प्यारो मन होय ।
पाये सोने की छुरी पेट न मारे कोय ॥

अनिष्ट से इष्ट के लाभ में भी शुभगति नहीं होती जहां विष का संसर्ग है वहां अमृत भी मृत्यु के लिये है और भी धन पांवं धूल के समान है और यौवन पहाड़ी नदी के बेग के सदृश है और जीवन फेन के तुल्य है जो मनुष्य धर्म बिचार काम नहीं करता वह अंतसमय पश्चात्ताप कर शोक की आग से जलता है यह बिचार अपने पुत्र कृष्णदत्त का ब्याह छोटी अवस्था में न किया था और यज्ञोपवीत कर काशी पढ़ने भेज दिया था वह काशी से पढ़कर आया ही था कि केशवदत्त का पुरोहित भी बर की खोज में वहां जा पहुंचा और उस लड़के का शील गुण और पाण्डित्य देख अति प्रसन्न हुआ और रामसेवक से सब वृत्तान्त कहा इस पीछे टीपना की नक़ल लेके केशवदत्त के पास लौट गया और नक़ल दे सब वृत्तान्त घर बर कुल आदि का ब्यौरेवार कह सुनाया और कहा कि वह लड़का बारानसी से पढ़कर हाल ही आया है रामसेवक ने भांड़ों कासा स्वांग नहीं किया जैसा कि लोग यज्ञोपवीत के समय करते हैं कि लड़का झूठ मूठ काशी पढ़ने को चल होता है तब उसका मामा हाथ पकड़ मनाता है कि पढ़ने मत जाओ हम तुम्हारा ब्याह कर देंगे ऐसा कह सुन सब स्त्री पुरुष ठट्ठा मार हंस हंसा के स्वांग सा कर चुप हो बैठ रहते हैं लड़के को घर में बैठा बहुधा मूर्ख ही रखते हैं परंतु रामसेवक ने ऐसा न करके प्राचीन रीति अनुसार सच मुच काशीजी भेज ही दिया था वह लड़का शील गुणनिधि रूप यौवनसंपन्न अठारह वर्ष की आयु का महान् पण्डित है यह सुन केशवदत्त अति प्रसन्न हुआ और घर में जा लीलावती को सब ब्यौरा कह सुनाया वह भी सुन मुदित हुई इस पीछे दो चार पण्डित बुला वर्ग प्रीति मिलाने बैठा निर्णय करने से जाना गया कि वर्ग योनि नाडी गन आदि सब बिधि तो अच्छी मिली परंतु वर्ण में खामी रही पण्डितों को बिदा कर केशवदत्त ने घर में जा अपनी पतिनी से कहा कि विधि मिलने से और सब बातों में तो मेरा मन भर गया परंतु लड़का शूद्रवर्ण और पुत्री ब्राह्मणवर्ण है इसी में कुछेक संकेत है यह सुन लीलावती हंसकर बोली इसका क्या संदेह है शूद्रों का धर्म है कि ब्राह्मणों की टहल करें वह लड़का हमारी कन्या की सेवा करेगा केशवदत्त भी बिहंग बचन सुन हंसने लगा फिर लीलावती

.ने कहा महाराज वर्ग प्रीति मिलने में अति बिचार करना योग्य नहीं क्योंकि बहुधा देखने सुनने में आता है कि बड़े २ ज्योतिषी पण्डितों की कन्या भी चैाक रांड हो जाती ओर अनेक दुख पाती हैं क्या वे लोग वर्ग प्रीति मिलाने में कुछ गई करते होंगे यह दैवी बातें हैं ईश्वर की ईश्वरता में किसी की गति नहीं सब पण्डित ओर ज्योतिषी उसकी माया में भूले २ फिरते हैं वह ईश्वर सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ है उसकी महिमा अपरम्पार है इस नाशवान् संसार में अनेक ऋषि मुनि नर आदि बड़े २ विद्यातिविद्य हो गये परंतु किसी ने पार पाया न अब कोई पावेगा महात्माओं का बचन है ॥

दोहा

हानि लाभ जीवन मरन यश अपयश विधि हाथ ॥

मनुष्य केवल थोथी भरमना में पड़ा है आप चित्त में कुछ दुबिधा भाव न करें ईश्वर का दृढ़ विश्वास मन में धरें वह सब अच्छा ही करेगा एक प्रसंग मैं ने सुना है कि जब द्वारिका से श्रीकृष्णचंद्र रुक्मिनी को लिये भीषमपुर को चले तब पुरी से बाहर निकलते ही मृगमाला मार्ग काट गई यह देख अर्जुन ने कहा महाराज शकुन शुभ न हुआ यह सुन कृष्णचंद्र हंसकर बोले ॥

दोहा

हरना भले कि हरि भले सगुना भले कि श्याम ।
अर्जुन तुम रथ हांक दो भली करेंगे राम ॥

यह सुन अर्जुन का संदेह दूर किया ओर भीषमपुर पहुंचते ही रुक्मिनी को रथ में बैठा द्वारिका का मार्ग लिया चंदेरी का महाप्रतापी राजा शिशुपाल मुंह देखता ही रह गया महाराज ईश्वर की माया ईश्वर ही जाने देव दनुज ओर मनुज आदि किसी के जानने योग्य नहीं है आप ईश्वर का स्मरण कर नीमसार को जावें ओर अपनी आंखों से सब वृत्तांत देख टीका चढ़ा आवें यह सुन केशवदत्त के मन का संदेह दूर हो गया ओर उसने नाई पुरोहित को संगले सिद्धिगणेश कर दिया कुछ दिनों में नीमसार पहुंच धर्मशाला में टिका ओर नाई को रामसेवक के घर कृष्ण-

दत्त के बुलाने को भेजा यह समाचार कृष्णादत्त की माता सुन, कृष्णादत्त से बोली बेटा तुमको पण्डित केशवदत्त देखने को आये हैं अपने को बस्त्र आभूषण आदि से आभूषित कर उनके पास जाओ कृष्णादत्त बोला मैया बस्त्र आदि की सजावट देख मूर्ख मोहित होते हैं पण्डित केवल विद्यारूपी आभूषण देखते हैं जो मनुष्य विद्यालंकार से अलंकृत है उसको दूसरे गहने की चाह नहीं होती यह सुन उसकी मा ने मन में सराहना कर मुदित हो अशीस दे बिदा किया वह नाई के साथ केशवदत्त के पास पहुंचा उसने बड़े आदर सत्कार से अपने समीप बैठाया और कुशल प्रश्न पूछ बात चीत करने लगा केशवदत्त उस सभाचातुर लड़के की चतुराई और पण्डिताई देख अति हर्षित हो मोहित हुआ और मन में बिचारने लगा कि जैसी मेरी कलावती सुंदर रूपशीलगुण संपन्न है वैसा ही यह पुत्र भी ईश्वर ने अति उत्तम योग मिला दिया है ऐसा सुंदर और सूधा पुत्र मिलना कठिन है कहा भी है ॥

दोहा

एक तो गुण दीनो दई दूजे रूप निबंध ।
यह दोनों कहां पाइयें सोनो और सुगंध ॥

जैसे बने वैसे इसी को टीका चढ़ाना योग्य है यह बिचार कृष्णादत्त को बिदा किया और रामसेवक से कहला भेजा कि आप से भेट करने की अभिलाष है रामसेवक सुन प्रसन्न हुआ और बुलवा के बड़े हर्ष से भेट कर कुशल प्रश्न पूछ आदर सहित आसन दिया इस पीछे थोड़ी बेर तक दोनों जन आपस में इधर उधर की बात चीत करते रहे उपरांत केशवदत्त ने अपने मनोरथ को प्रगट किया रामसेवक मुदित हो बोला कि मुझे आप के घर की सगाई से किसी प्रकार का निषेध नहीं परंतु हमारी दक्षिणा अधिक है सो बिचार कर लो ॥

ब्याह में बद और अति बरात का निषेध

केशवदत्त ने कहा महाराज आप यथार्थ कहते हैं परंतु मैं आप की दक्षिणा देने के सामर्थ नहीं हूं केवल कन्या टहल पात के लिये देता हूं

यह सुन रामसेवक मौन हो मन में मनसूबा करने लगा और थोड़ी देर में बोला कि इसका उत्तर भोर दूंगा बिना सोचे समझे उत्तर देना भला नहीं जानता कवि का बचन है ॥

चौपाई

सहसा कह पाछे पछताहीं बुद्धि कहहिं तिनको बुधि नाहीं ॥

यह कह केशवदत्त को बिदा कर आप घर में गया और कृष्णदत्त की माता से सब वृत्तान्त कहा वह भी पण्डिता थी रामसेवक से बोली महाराज दक्षिणा का नियम कुछ शास्त्र अनुसार नहीं है परंतु यह कहो कि शास्त्र के अनुसार कौन चलता है प्राचीन समय में स्वयम्बर होता था उस में कन्या की अभिलाष कर बड़े २ विद्वान् इकट्ठे होते थे उन में से कन्या अपनी इच्छानुसार बर ढूंढ़ लेती थी उन दिनों मूर्खों का व्याह होना अति कठिन था इसी हेतु से बीस पचीस बर्ष की अवस्था तक लड़के पढ़ने में श्रम करते थे और बहुधा नामी पण्डित हो जाते थे अब तो ऐसी रीति बिगड़ी है कि जिसका बर्णन नहीं कर सक्ते इस समय में लोग कुलीन घराने में कन्या को देने से अपनी अधिक प्रतिष्ठा मानते हैं इसी हेतु कुल के सिवाय और किसी बात का बिचार नहीं करते घर बैठे छः २ सात २ बर्ष के मूर्ख लड़कों को धन सहित अपनी पुत्री देते फिरते हैं और वे कुलीन भी कुछ आगा पीछा नहीं सोचते रुपयों के लोभ में आके तुरंत ही छोटे २ लड़कों का व्याह कर लेते हैं बेटे बेटी वाले दोनों स्वार्थ में अंधे हो धर्म मार्ग छोड़ अधर्म मार्ग में पांव धरते हैं न तो कन्यावाले यह विचारते हैं कि जिस उत्तम कर्म के कारण यह लोग हम से कुलीन ठहरते चले आते हैं उस पुण्यकर्म का इन में अब भी कुछ लेश है अथवा केवल नाम ही नाम है और न पुत्रवाले को इस बात का ध्यान है जिस हेतु से लोग प्रतिष्ठित और पूज्य मानते हैं बहुधा कुल के अभिमान से संतान की शिक्षा पर ध्यान न रखकर मूर्ख ही रखते हैं क्योंकि उन्हें निश्चय है कि हमारी संतान कैसी ही मूर्ख क्यों न हो कुल का नाम सुन कोई न कोई आंखों का अंधा और गांठी का पूरा आही टटोलेगा यह सुन रामसेवक बोला कि मैं ने

तो ऐसा नहीं किया कृष्णादत्त की मा ने कहा कि हां आपने ऐसा नहीं किया तो भी कुल का अभिमान तो किया जो अभिमान न होता तो दक्षिणा का नाम न लेते इस रीति को आप क्या भला जानते हैं बहुधा निर्द्धन कुलीन लोगों की कन्या बूढ़ी होजाती हैं तब भी व्याह का सुबीता नहीं लगता इस कारण उनके चित्त में अति खेद होता है और उन्हें पुत्रियों का अनादर करना पड़ता है यह पातक क्या थोड़ा समझते हो सज्जनों का धर्म है कि बिपत्ति में पड़े हुए दीनों को छुड़ावें यह नहीं कि विशेष कर अपनी जातवालों ही के घर २ भीख मंगावें और अनेक प्रकार के क्लेश पहुंचावें किन्तु उचित है कि जब कन्या वाला कन्या देने को आवे तब उस पर दया करे और उसका हित बिचारे उसकी यथाशक्ति दक्षिणा लेने में और सम्बन्ध कर देने में किसी तरह का निषेध न करे यह सोच के कि पुत्र के व्याह में धन लेने से कोई धनवान नहीं होता परंतु इसके बिपरीत में आंखों देखती हूं कि लोग अति कठोरता कर पुत्रीवाले के खोज मारने की घात लगाते हैं और फिर घमंडीलाल अग्निहोत्री की नाई पछतावा कर अति खेद पाते हैं रामसेवक बोला यह कैसे उस धर्मशील ने कहा ॥

कि सिंगीरामपुर में देबीदीन दुबे रहता था वह अपनी पुत्री के हेतु बर खोजते २ कन्नौज नगर में पहुंचा वहां घमंडीलाल अग्निहोत्री रहता था उसके पुत्र को देख यह मन में ठानी कि जैसे बनेगा वैसे इसी घर सम्बन्ध करूंगा यह बिचार देबीदीन घमंडीलाल के पास पहुंचा और सगाई की चर्चा चलाई वह बोला कि हम हज़ार रुपये से कम का व्याह नहीं ओटते देवीदीन बोला हज़ार रुपये तो मेरे पास नहीं हैं पर जो कुछ फूल आखत मैं ने जोड़ा है वह घर न रक्खूंगा आप की भेंट कर कन्या टहल के लिये दूंगा घमंडी ने कहा ऐसा नहीं होता जो हमारी दक्षिणा है उस में एक कौड़ी कम न लेंगे देवीदीन ने बारम्बार बिनय कर कहा कि ब्राह्मण कोमल चित्त और दयालु होते हैं आप कठोरता छोड़ मेरी प्रार्थना स्वीकार कीजिये पर वह धन कुल का अभिमानी काहे को मानता था किसी कवि का बचन है ॥

दोहा

कनक कनक तें सो गुनी मादकता अधिकाय ।
वा पायें बौरात है वा खायें बौराय ॥

देवीदीन ने सोचा कि यह घमंडी पूरी दक्षिणा लिये बिना न मानेगा और मुझे यह कार्य करना ही है इसलिये इसी का हट रक्खो आगे जो होगा सो देखा जायगा यह बिचार, देवीदीन ने कहा आप अपना ही हट रक्खें पर एक बिनय मेरी भी मानें कि मुझ से रुपये ले आप अपने घर में रक्खें बहुतसी भीड़ भाड़ जोड़ वृथा नष्ट न करें उसने कहा नहीं २ हमारी बरात बहुत भारी आवेगी आप दाना घास आदि सामिग्री जोड़ने से अचेत न रहियो थोड़ी बरात से बड़ी नामोसी की बात है देवीदीन ने कहा कि अधिक भीड़ भड़क्का जोड़े नामवरी नहीं होती बरन अच्छी सेवा सत्रूखा न बन पड़ने से दोनों ओर का फ़जीताचार होता है जो तुमको यश कीर्त्ति ही करना अंगीकार है तो उस रुपये को पाठशाला धर्मशाला कुआ बावड़ी तड़ाग बाग़ आदि ऐसे किसी काम में लगाना उचित है जिस से लाखों जीवों का उपकार होवे ऐसे काम से ईश्वर भी अति प्रसन्न होता है और जब लग संसार में उस बस्तु का चिन्ह रहता है तब तक बनवानेवाला मानो जीता है संसार में बड़े २ प्रतापी हो गये परंतु ब्याह में रुपया अधिक उठाने से कोई नामी नहीं हुआ जो हुआ सो परोपकार ही में धन व्यय करके नामी हुआ है यद्यपि देवीदीन ने सब बातें नीतियुक्त कह सुनाईं परंतु घमंडी के मन एक भी न भाई किसी कवि का बचन है ॥

दोहा

फूले फले न बेत यदपि सुधा बरसै अधिक ।
मूर्ख हृदय न चेत जो गुरु मिले बिरंच सम ॥

देवीदीन भी हेकड़ी में आ टीका चढ़ा अपने घर गया और सब प्रकार की सामिग्री बहुताइत से इकट्ठी करने लगा इधर घमंडीलाल भी बहुत से गाड़ी घोड़ा रथ आदि जोड़ने के यत्न में हुआ और अपने

हितकारी ब्योहारी नातेदारों आदि के यहां गांव २ न्यौता भेजने लगा एक न्यौता मेरे मैके में भी पीतम्बरदास के घर आया उस बिचारे के प्राण पत्री पढ़ते ही सूख गये क्योंकि अपने घर में दबा दबाया बैठा था अब उसको कपड़े गहना सवारी आदि की चिन्ता करनी पड़ी वह मेरे बाप से आके कहने लगा कि बैठे ठाले एक बरात को आपदा लग रही आप हमारी कुछ सहायता करें मैं कुछ मंगनई मांगने आया हूं उसकी दशा देख मुझे यह वाक्य याद आया कि सेवा के समान सब महत्व को चांदनी के समान तम को बुढ़ापे के समान सुंदरता को और हरि कथा के समान पाप को मांगना सैकड़ों गुनों को हरलेता है यह बिचारा इस बेला बड़े बिस्मय से कांतहीन हो रहा है बरात के लिये न्यौता देना भी निर्धनों को खेद देना और उनकी पति उघाड़ना है जैसी इसे आपदा मालूम हुई वैसी अनेकों को मालूम हुई होगी बरात क्या है धनवानों का खेल और निर्धनियों की मौत है इस से तो उत्तम बात यह है कि जो दस बीस मनुष्य अपने घर गोहान के होवें उन्हीं को बराती बनावे दूर २ से मनुष्यों को बुलाके खेदित न करे बहुत बरात जोड़नेवाला एक तो आप झिक २ में पड़ता है दूसरे लड़कीवाले को क्लेशित करता है तीसरे बरातियों को आपदा में डालता है और इस दुख को सुख मानता है ब्याह आदि उत्सवों में चित्त को आनंद होना चाहिये न यह कि उलटा खेद हो कवि का वचन है ॥

दोहा

कीजे सुख को होय दुख यह धौं कौन सियान ।
वा सोने को जारिये जा से टूटे कान ॥

प्राचीन समय में बुद्धिमान् लोग अपने स्वदेशी बंधुओं का हित बिचार नई रीति ऐसी चला देते थे जिस में धनी निर्धनी सब का निवाह सुगमता से हो सके था अब लोग बुरी और दुखदायक रीतों को जान बूझ के भी नहीं छोड़ते यह कैसी मूढ़ता है पीतम्बरदास को खिन्नमन देख मेरे पिता ने धीर्यबंधा कहा जो चाहो सो लेजाओ कुछ चिन्ता मत करो पीतम्बरदास प्रसन्न हो बोला यद्यपि बालकों को गहना पहराना बुरा है और विशेष कर

मंगनई का परंतु बरात में नंगे बूचे लड़कों को लेजाऊं तो लोग नाम धरेंगे कि घर में न था तो क्या मांगे भी नहीं मिलता था और जो उन्हें घर छोड़ जाऊं तो लोग कहेंगे कि यह बरात के बड़े रसिक हैं आप तो आये और लड़कों को न लाये दोनों विधि कठिनता दीख पड़ती है आज कल विद्या दीपक की ज्योति मंद होने से लोग सूधी बात को उलटी और उलटी को सूधी मानते हैं लाचार हो कुछ गहना मांगने आया हूं मेरे बाप ने तुरंत उसको चाहती बस्तु देदी कदाचित् न देता तो जले पर नोन लगाना था इसी तरह किसी को कपड़ों की और किसी को सवारी आदि की दिक्कत उठानी पड़ी होगी अब आगे का वृत्तांत सुनो जब मड़वे के दिन सब लोग घमंडीलाल के घर पहुंचे तब कोई दाना बिनौला मांगता था कोई भूसे को पुकारता था कोई घास सूखी बताता था कोई लकड़ी कंडा को चिल्लाता था कोई आपस में चरचा करता था कि इसने कुछ सामा नहीं करी वृथा सब भले मानसों को बुलाके आपदा में डाला है निदान ज्यों त्यों कर निबड़ पावड़े के भोर होते ही बरात सिंगीरामपुर को सिधारी मार्ग में किसी का घोड़ा छूटता था किसी का पहिया टूटता था किसी का बैल गिरता था किसी का छकड़ा अड़ता था इसी प्रकार सब लोग आपदा उठाते हुए जैसे तैसे सांझ तक जनवासे में पहुंचे यद्यपि देबीदीन ने बड़ी सामा इकट्ठी की थी पर क्या होता है जब कि उसके नातेदार ही के कुछ पीर न हुई तो फिर ऊपरी लोगों को क्या होती विशेष कर गाड़ीवान कहार चंमार बजंत्री आदि नीच लोगों को तो बरात में बन पड़ती है कुछ खावें कुछ बिगाड़ें कुछ बनिये के हाथ बेच कौड़े करें तिस पर भी बुराई करें कि इस बरात में भूखों प्यासों मरे जाते हैं जब देबीदीन ने सामिग्री निबटते देखी तब तुरंत हा ख़रीदने लगा बिचारे को आवश्यकता में रुपया का डेढ़ देना पड़ता था भारी बरात सुनके सैकड़ों भाट भिखारी ढकिल पड़े घमंडीलाल सब को देता था परंतु तो भी वे लोग हाय तोबा मचाते थे क्योंकि उनकी परिपाटी यही है बरात क्या हुई यम की धाड़ हुई दोनों ओर के हज़ारों रुपये लुट गये तो भी बुराई पल्ले बंधी .यही कहावत हुई कि उतराई की उतराई दी और मुफ़्त में बांस खाये

बहुतेरों की चीज़ बस्तु खोगई और बहुतेरों के लड़कों का गहना उतर गया जो बिचारे मांग २ के पहरा ले गये थे उन्हें रुपये की बस्तु के दो देने पड़े और बेकाज ऋणी होना पड़ा घमंडी को भी लील का टीका जन्म भर को होरहा जहां बहुत मनुष्य इकट्ठे होते हैं तहां सभी तरह के होते हैं फिर ऐसा हुआ तो क्या आश्चर्य हुआ बुद्धिमान लोग ऐसे झगड़ों से सदा दूर रहते हैं निदान ज्यों त्यों कर निबड़ पबड़ बरात बिदा हो घर आई और वहां देबीदीन ने अपना गहना गांठा बेच सब का ऋण चुकाया और मन में पछताया कि मैं ने हेकड़ी में आकर वृथा घर का खोज गंवाया अब इस दशा में सिंहों और गजों के बन में वृक्ष का घर बनाके रहना और फल फूल खाना घास फूस का बिछौना और छाल पात का उढ़ौना भला है परंतु धनहीन होके भाइयों में रहना भला नहीं यह बिचार लाज का मारा परदेश को निकल गया यह समाचार सुन घमंडीलाल पश्चात्ताप कर रोके कहने लगा कि मैं ने बहुत बुरा किया जो आप बिगड़ा और अपने सम्बन्धी को बिगाड़ दिया अब धन जोड़ बैसा ही बनना कठिन है कवि का बचन है ॥

दोहा

सुधरी बिगड़े बेग ही बिगड़ी फिर सुधरे न ।
दूध फटे कांजी पड़े सो फिर दूध बने न ॥

देखो यह कैसी निरदयता की बात है कि जब तक बरात समधी के घर रहती है तब तक उसे बेरोसम जान लूटालूट और लाओ २ मचाते हैं यह नहीं बिचारते कि बिचारे के घर में है वा नहीं है इतनी कथा कह रामसेवक की पतिनी बोली महाराज जिस काम करने में लाभ कुछ न दीख पड़े और हानि का भय लगा हो उसको भूलके न करना चाहिये और दरिद्रता से सदा डरना चाहिये कवि का बचन है ॥

कवित्त

दारिद्रता लजवावति है अरु लाज न रखत पराक्रम नामा ।
हीन पराक्रम होत अनादर अनादर है अति खेद की सामा ॥
खेद बढ़ावत शोक सदा अरु शोक से बुद्धि तजे निज ठामा ।
बुद्धि बिना क्षय होत अरे मन दारिद है सब आपद धामा ॥

महाराज यह बदे की रीति महानिन्दित है पहिले तो सम्बन्धियों में निठुरता और रिस रोष कराती है दूसरे दोनों ओर का अधिक व्यय कराती है तीसरे लोगों से यह कहलवाती है कि फलाने ने धन के लोभ से हीनकुल के घर का व्याह करलिया चौथे पुत्र के ब्याह में जैसा खुशी होके लेते हैं वैसा ही पुत्री के ब्याह में दुखी होकर देना पड़ता है इस में मुझे कुछ भी लाभ नहीं सूझ पड़ता केवल हानि ही हानि दीख पड़ती है इसलिये आप इस निन्दित रीति को छोड़ धर्म बिवाह कीजिये और जग में यश लीजिये केशवदत्त ने जो कुछ कन्या हेतु निरूपन किया होगा सो वह घर न रक्खेगा धर्मब्याह में कुछ बना कुछ न बना तो कोई नाम नहीं धरता है बदे के व्याह में नेंक ही चूकने से नामेंसी और अपयश होता है रामसेवक अपनी पतिनी के धर्मनीति साने बचन सुन गद २ हो मन में प्रशंसा करने लगा दूसरे दिन केशवदत्त फिर पहुंचा रामसेवक ने बड़े आदर से लिया और कहा मुझे आप की सगाई स्वीकार है आप कुछ चिन्ता न मानो जो आप से बन पड़े सो करें न बन पड़े सो न करें केशवदत्त सुन अति प्रसन्न हुआ और ईश्वर का धन्यवाद किया इस पीछे फलदान चढ़ा अपने घर आया और सब वृत्तांत लीलावती को कह सुनाया उपरांत व्याह की सामा जोड़ने लगा उधर रामसेवक भी बरात की तैयारी करने लगा दोनों ओर सहज ही में सब सामान होगया नेंक भी दिक्कत न उठानी पड़ी क्योंकि धर्म ब्याह में खटके का काम ही क्या था यह तो अधर्म ब्याह का ही प्रभाव है जो दोनों ओरवालों को अति कलेश उठाना पड़ता है रामसेवक ने साधारण बरात जोड़ने का मनसूबा कर न्योता दिया सो जो लोग उसके घर पहुंचे उनका अच्छे प्रकार आदर सत्कार किया भोर होते ही निकरोसी हो बरात ने सिद्धिगणेश किया मार्ग में रामसेवक ने सब प्रकार चौकसी की और प्रत्येक मनुष्य के खाने पीने आदि की खबर ली किसी को दुखी न होने दिया सब लोग सुख पूर्वक नीमसार में पहुंचे केशवदत्त बरात का आगमन सुन दस बीस भले मनुष्य ले अगवानी को आया और रामसेवक को भेट दे जनवासे में लाया और सुन्दर जनवासा दे तुरंत सब के खान पान दाना चारा आदि का अच्छे प्रकार प्रबंध कर दिया

यद्यपि रामसेवक ने थोड़ी बरात जोड़ी थी परंतु चुटपुटी और अति सुन्दर सजीली थी गंवरदल बटोर यम कीसी धाड़ न लाया था बरात की शोभा प्रतिष्ठा देख गांव बस्ती के सब लोग सराहना करते थे परंतु लुंगाड़े और ठलुये लोग कहते थे कि बरात बहुत थोड़ी आई क्योंकि दुष्टों के पराया फ़ज़ीताचार लख अति हर्ष होता है कवि का बचन है ॥

चौपाई

परहित हानि लाभ खल केरे उजड़े हर्ष बिषाद बसेरे ।
हरिहर जस राकेश राहु से पर अकाज खल सहस बाहु से ॥
खल परदोष लखहिं सहसाखी परहित घृत जिनके मन मांखी ।
तेज कृशानु रोष महिषेशा अघ अवगुन धनधनिक धनेशा ॥
पर अकाज लग तनु परि हैरहीं जिमहिम उपल कृषीदलं गरहीं ।
बचन बज्र जिन सदा पियारे सहस नैन पर दोष निहारे ॥
बंदैां खल जस शेष सरोषा सहस बदन बरनै पर दोषा ।

वे दुराचारी लगा बुझौनी कर केशवदत्त और रामसेवक में जूता उछला के तमाशा देखा चाहते थे (जैसा इन दिनों थोड़ी बरात देख लोग करते हैं) परंतु केशवदत्त तो बड़ा पण्डित और बुद्धिमान् था उनके छल में कैसे आता था प्रत्येक को मधुर बचन कह समझा देता था कि भाई थोड़ी बरात की सेवा सुश्रूखा अच्छे प्रकार बन पड़ती है अधिक भीड़ भाड़ में फ़ज़ीताचार होता है उसने तीन दिन बरात रक्खी और नित नया आदर सत्कार किया और जो कुछ बना अच्छे प्रकार दान दहेज दिया रामसेवक का भी अधिक ख़र्च न होने दिया नाई नेगी भाट भिखारी आदि कोई भी झगड़ा झगड़ी न करता जो जिसको मिलता धर्म व्याह का नाम सुन हंसी खुसी से ले लेता और दुलहा दुलहन को अशीस देता सच तो यह है कि जहां धर्म का नाम है वहां पाप पाखंड का क्या काम है जब जिवनार के समय स्त्रियां फूहर गारी गातीं तब लीलावती कोमल बचन कह समझाती कि स्त्रियों को मर्याद की गारी गाना और ठट्ठा आदि करना योग्य है मर्याद से बाहर पांव धरना उचित नहीं

युवतियों को युवावस्था में निर्लज्ज शब्द मुख से काढ़ना मानों बारूद की कोठरी में चिनगारी छोड़नी है इन शब्दों से स्वभाव बिगड़ता है और चित्त में बिकार हो मन विषय रस में पड़ता है फिर साधना कठिन पड़ता है कवि का बचन है॥

दोहा

प्रेम छके मन को हटक रख न सकत कुल लाज।
कमल नाल के तंतु से को बांधत गजराज॥

और भी दोहा

भूल लगे मदरा पिये सब काहू सुधि होय।
प्रेम सुधारस जिन पियो तिन न रहे सुधि कोय॥

उचित है कि मन को पहिले ही से विषयरस की ओर न झुकने देवे यह उचित नहीं कि यौवनमतवाले के हाथ में बिषय रस हथियार देके अपने हितकारी सत् गुनों का नाश करवावे इस से मन को पहिले ही से रोके रहे फिर रुकना कठिन है कवि ने कहा है॥

दोहा

प्रेम पगत बरजी न क्यों अब बरजत बे काज।
रोम रोम बिष रमि रह्यो अब नहिं बनत इलाज॥

इसलिये कहती हूं सब मिल मेरा अपराध क्षमा कीजियो लीलावती के अमृत रूपी बचन सुन सब ने सुख माना और मन मस्तहाथी के लिये सुंदर ज्ञानांकुश जाना लीलावती सुंदर रसीली जिवनारें गाती जिन में कोई निर्लज्ज वा फूहर बात न आती सब छोटे बड़ों को सुन अत्यन्त हर्ष आनंद होता तीनों दिन बराबर नित नया आनन्द बरसता रहा चौथे दिन हंसी खुशी से बरात बिदा हुई और दोनों ओर बड़ी नामवरी रही यद्यपि केशवदत्त को किसी से बहुत लेना देना नहीं पड़ा था परंतु तो भी ब्याह के काज में थोड़ा बहुत लेखा जोखा होई रहता है केशवदत्त और लीलावती जब कलावती के ब्याह से उऋण हो सुख पूर्वक बैठे तब तन मन से ईश्वर का धन्यवाद किया॥

लेन देन के विषय में

उपरांत लीलावती ने कहा 'महाराज एक प्रार्थना और है कि जो जिसके घर से आया हो वह उसके घर बैठे बिना मांगे पहुंचा दिया जावे क्योंकि लेन देन में सदा सावधानी रखनी चाहिये घाल मेल रखना उचित नहीं जो मनुष्य ऋण से डरता रहता है वह कभी ऋणी नहीं रहता जो निडर होता है वह सदा ऋणी बना रहता है बुद्धिमान लोग बहुधा ऋण करने की बान नहीं डालते यदि किसी आवश्यक काम के लिये उधार लेना पड़ता है तो लेते हैं परंतु खटका करके जहां तक होता है वहां तक शीघ्र ही चुकादेते हैं मूर्खों की नाईं थोथे कामों में कठुआ काढ़ ऋणी नहीं होते लेनदेन में सावधानी न रखने से मनुष्य की साख जाती रहती है और फिर कोई उसे कौड़ी को भी नहीं पतियाता कवि का वचन है ॥

दोहा

फेर न हुई है कपट से बनज किये व्योपार ।
जैसे हांडी काठ की चढ़े न दूजी बार ॥

जो मनुष्य यह बिचार ऋण लेते हैं कि होगा तो देंगे और न होगा तो व्योहरा हमारा क्या करेगा वे कभी उऋण नहीं होते और जो लोग ईश्वर से प्रार्थना करते रहते हैं कि हमको ऋण से उद्धार करो उन्हें भगवान् उद्धार ही कर देता है कोई २ दुष्ट अधर्म से व्योहरे का रुपया मार बैठते हैं पर उन्हें यह ठीक नहीं कि ऋण परलोक में भी नहीं छुटता है कदाचित् व्योहरे का कोई साखी नहीं है तो क्या हुआ ईश्वर सर्व दृष्टा तो साखी है इसलिये मनुष्य को उचित है कि धन के लिये धर्म छोड़ लोक परलोक न नसावे केशवदत्त को यह बात अतिप्रिय लगी उसने सब की कौड़ी २ घर बैठे तुरंत पहुंचा दी क्योंकि नीतिज्ञों ने ऐसा कहा है ऋण रोग अग्नि शत्रु इन चारों को मूल से उखाड़ना चाहिये रंचक भर भी शेष रहने से फिर शीघ्र प्रबल हो जाते हैं कवि का बचन है ॥

दोहा

जड़ कबहू नहिं काटिये काहू की मनधार ।
पाप रुरु ऋण की जड़ कटी यही भलो निर्धार ॥

रामसेवक ने भी घर पहुंचते ही बजंत्री कहार आदि सब की कौड़ी २ चुकादी इस पीछे रुपया बहुत बचा देख रामसेवक ने अपनी पतिनी से कहा कि देखो इतना रुपया भांड भगतियों के मुंह से बचालाया हूं उस धर्मज्ञा ने कहा कि धन की प्रकृति चंचल होती है इसलिये इसे ऐसे काम में लगाना चाहिये कि सदा स्थिर रहे रामसेवक ने अपनी प्रवीणा पतिनी की सम्मति लेके अधिक प्रचलित पथ पर पथिकों के सुख हेतु एक कुआ बनवाया और सुन्दर बाग़ लगवाया उस मार्ग हो जो पथिक निकलते वे शीतल छाया में बैठ फलादि खाते ठंढा जल पीते और सब प्रकार विश्राम पा रामसेवक की प्रशंसा करते और जय मनाते थे उस कुए बाग़ से मनुज पशु पक्षी आदि अनंत जीवों का उपकार होता था मनुष्य को उचित है कि जब भगवान् धन देवे तब ऐसे ही कामों में लगावे जिस से अनगिनत जीवों को सुख पहुंचावे इस महा पुन्य के प्रभाव से इस लोक में यश और परलोक में सुख मिलता है क्योंकि ऐसा कहा है ॥

दोहा

तुलसी या संसार में चार बस्तु हैं सार ।
सत्यबचन आधीनता हरिसुमरण उपकार ॥

इसलिये उचित है कि ईश्वर के दिये धन को ग्रोथे कामों में लगा बारह बाटकर दोषभागी न होवें ब्याह के पीछे रामसेवक और केशवदत्त परस्पर एक दूसरे के घर त्योहार ब्योहार बड़ी प्रसन्नता से पहुंचाते थे और दिन २ आपस में हर्ष अनंद बढ़ाते थे सच तो यह है कि जो मनुष्य दूर की सोच काम करते हैं उनके चित्त को न कभी खेद होता और न कोई हंसी कर पाता है परंतु जो आगा पीछा नहीं सोचते वे परिणाम में अपने किये का फल भोगते हैं ऐसा कहा है ॥

कुंडलिया

बिना बिचारे जो करें सो पाछे पछतायं ।
काम बिगाड़े आपनों जग में होत हंसायं ॥

जन में होत हंसायं चित्त में चैन न पावें ।
खान पान सन मान राग रंग मन हि न भावें ॥
कह गिरधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे ।
खटकत है दिन रैन किये जो बिना बिचारे ॥

जन्म मृत्यु व्याह काज आदि प्रत्येक अवसर में प्राप्ति का बिचार कर व्यय करना उचित है जो मनुष्य बित्त से बाहर पांव धरता है वह अवश्य चित्त में खेद वा दुःख में पड़ता है प्रत्येक काम का परिणाम पहिले सोचने से धोखा नहीं पड़ता कवि का बचन है ॥

दोहा

अपनी पहुंच बिचारि के करतब करिये दौड़ ।
तेते पांव पसारिये जेती लांबी सौड़ ॥

और भी ऐसा कहा है दोहा

कारज ताही को सरे करे जो समय निहार ।
कबहु न हारे खेल जो खेले दाव बिचार ॥

लीलावती ने अपनी पुत्री को चौथे अठवाड़े के भीतर ही बुलवाली थी उसी दिन से उसे ससुरे में रहने के उत्तम ढंग सिखाने लगी और यों कहके समझाने लगी ॥

गृहस्थी धर्म के उत्तम ढंग

कि बेटी अब थोड़े दिनों की तुम इस घर में पाहुनी हो कुछ दिनों में हम से अलग हो ससुराल में रहना पड़ेगा अब तुम उसी को अपना मुख्य घर समझो और अपने सास ससुर को धर्म का मा बाप जानो और उनकी सेवा सश्रूखा कर अच्छे प्रकार सनमानो अपने स्वभाव को ऐसा सुधारो कि प्रत्येक मनुष्य तुम से राज़ी रहे कहा है ॥

दोहा

आप भले तो जग भलो नाहीं भलो न कोय ।
जो जासों जैसी करे सो तिह तैसो होय ॥

यद्यपि तुम अभी अपने घर के लोगों की प्रकृति से जानकार नहीं परंतु चतुराई उसी का नाम है जो टेढ़े सूधे सभी को अपनी मधुरता और गंभीरता से प्रसन्न रक्खे जो तुम सबसे मेल मिलाप रक्खोगी तो वे भी तुम से प्रेम प्रीति मानेंगे कदाचित् कोई बिना अपराध भी तुम से रोष कर कटु बचन कह बैठे तो भी सहना उचित है जो सब की सहता है वही प्रशंसा योग्य होता है और सब में निभके रहता है जो बिना अपराध तुम से दो चार बातें उलटी सीधी कह लेगा वो आपही समझ सोच पछतावा करेगा तुमको रोष कर उत्तर देना उचित नहीं बरन और भी अधिक प्रेम दरशाना चाहिये किसी कवि का बचन है ॥

दोहा

जो तुम चाहो अधिक रस सीख ईख की लेव ।
जो तुम से अनरस करे ताहि अधिक रस देव ॥

जब कोई तत्ता हो तो तुम को ठंढा हो रहना चाहिये क्योंकि ठंढा लोहा गर्म को काटता है यह बिचार मन में करके कभी गर्म होना योग्य नहीं है प्यारी क्रोध ईर्षा डाह खुन्स छल झूंठ घमंड लोभ और लगालूतरी इन नौ बातों को अपना बैरी समझ कभी पास फटकने न देना और दया धर्म सत्य क्षमा नम्रता आधीनता मधुरता गंभीरता संकोच इन नौ को अपना परमहितकारी जान छिन भर को भी जुदा न कीजो सब के मन को मुट्ठी में रखना चाहिये किसी से बैर करना उचित नहीं क्योंकि बैरी चून का भी बुरा होता है सहनशील मनुष्य सदा प्रसन्न रहता है कवि का बचन है ॥

दोहा

दुर्जन के सुनकर बचन हुई रहिये चुप चाप ।
करे जो समता तासु की नीच कहावे आप ॥

और भी कहा है दोहा

मूर्ख को मुख बंब है निकसत बचन भुअंग ।
ता की औषद मौन है बिष नाहिं ब्यापत अंग ॥

हे प्रानप्यारी नेक ध्यान देके देखो कि ईश्वर सर्वशक्तिमान ने कैसी बिचित्र रचना रची है कि इस संसार की गाड़ी बनाके भाग्य और उपाय दे। पहिये लगाये हैं इस में धर्म की धुरी डालके और गृहस्ती का जुआ बांधके स्त्री और पुरुष दे। बैलों के। जोत दिया है जो स्त्री पुरुष साहस की फेंट बांध इस गाड़ी के। अच्छे प्रकार खींचते हैं ता उन्हें ईश्वर स्वामी प्रसन्न हो अच्छे प्रकार खाने पीने के। देता है और सदैव सुखी रखता है और जो आलस कर गरियार बैल की नाईं कदराता है वह अपने स्वामी के। खिजाके अत्यन्त खेद पाता है और जन्म दुःखही में बिताता है इसलिये हे प्यारी गृहस्ती के काम में कभी आलस करना न चाहिये जो काम जिस बेला करने का है उसे तुरंत उसी समय करना उचित है टाल देने से काम का रस काल पीता है कहावत है कि ॥

(औसर चुके डोमनी गावे ताल बिताल)

देखो कोई मनुष्य बाहर से अति श्रम कर कुछ बस्तु घर में लाया और स्त्री ने आलस कर उसे कुत्ता बिल्ली से खिलाया ता कहो लानेवाले के। कैसा क्रोध उपजेगा घर के समस्त काम धंधे स्त्री ही के सिर होते हैं इसलिये प्रत्येक काम के। ऐसी सावधानी से करना चाहिये कि पति के मन में खेद न होने पावे जो फूहर स्त्री होती हैं वे अच्छी बस्तु के। भी बुरी कर धरती हैं और चतुर स्त्री बुरी के। भी अच्छी कर दिखाती हैं हर एक बस्तु के। बड़ी चैाकसाई और सावधानी से धरना उठाना चाहिये आतुरता और आलस्य कर बिगाड़ना उचित नहीं और भी प्रत्येक बस्तु के। काम काज में अटकल से उठाना चाहिये अनाप सनाप उठाके वृथा बरबाद करना योग्य नहीं कृषी मनुष्य के निकट कभी दरिद्रता नहीं आती तुम्हारा स्वामी बाहर से जो बस्तु लाकर घर में डाले उसे बड़ी चैाकसाई और चतुराई से काम में लाना मूर्ख स्त्रियें की नाईं किसी ठगनी के छल में आके बाहर मत बहाना बहुधा कुटिल स्त्रियें के समागम से मूर्ख नारियां कुगांठ करने के। घर काटती हैं और रुपये का माल धेलों में बहाने लगती हैं और सठता के कारण नेक भी हान लाभ नहीं बिचारती हैं जब कुछ पूंजी जुड़ती है तब वे ही कुमार्गी स्त्रियां जो कि यह बुरा काम सिखाती हैं ब्याज का लोभ दिखा उधर के मिष कुगांठ का रुपया

ले जाती हैं फिर अनेक बातें बताती हैं और रुपये का दर्शन हर्गिज़ नहीं करातीं हे बेटी ऐसी दुराचारनियों से सदा डरना चाहिये वे कपट से सने हुए मधुर बचन बोल अति स्नेह दर्शाती हैं और अपने को अत्यन्त सूधा सच्चा दिखाके दांव घात लगाती हैं कवि का बचन है ॥

चौपाई

नवन नीच की अति दुखदाई जिम अंकुश धनु उरग बिलाई

ऐसी भोरी भारियों से सदा सावधान रहना चाहिये उन से बचने का सब से उत्तम उपाय यह है कि उन्हें मुंह न लगावे न कभी उनकी बात को पतियावे और भी बहुधा ऐसा होता है कि जहां चार छः युवतियां हमझोली की इकट्ठी हुईं वहां वे अपनी २ कथा कह चलीं एक कहती है कि कल मैं मूड़ का मिष किये दिन भर पड़ी रही घर का काम हाथ से भी नहीं छुआ दूसरी बोली रात मेरे स्वामी ने पानी मांगा पर मैं ने रिसके मारे नहीं दिया तब झकमार के आप ही उठके पिया तीसरी कहती है कि जब मुझको रिस आती है तब किसी की बात नहीं सुहाती सब पर झूंझल आती है मेरी चेष्टादेख उस समय घर के सब लोग डरने लगते हैं चौथी ने कहा कि जिस बस्तु के बनवाने वा लेने का हठ करती हूं उसे बनवाके वा लेके ही रोटी खाती और खाने देती हूं पांचवीं यों अहूकी मारती है कि मैं किसी से नहीं डरती अपने मायके के ऊपर सब को दबाये रहती हूं हे बेटी कदाचित् तुम भी ऐसे यथा में संयोग से पड़ जाओ तो किसी की बातों में आ मन में कुछ बिकार उत्पन्न मत करना क्योंकि ऐसी बातों में कुछ बड़ाई नहीं होती किन्तु उलटी बुराई पल्लेबंधती है मायके के धन पर फूलना उचित नहीं यह सब बने २ के साथी हैं दुखे सुखे सुसराल ही से काम पड़ता है जो कुछ तुम्हारी सास ससुर वा स्वामी अपनी प्रसन्नता पूर्वक बस्त्र आभूषण आदि भली बुरी बस्तु देवें उसे ही हंसी खुशी से लेकर पहरना ओढ़ना चाहिये रूप यौवन मायके आदि के अभिमान से मान करना अथवा कभी किसी बस्तु के लिये रिस कर मुंह चढ़ा कुरूप बनाना उचित नहीं और घर में किसी पर अधिक गहना गांठा देख ईर्षा भाव करना वा मूर्ख स्त्रियों

की नाईं अधिक आभूषण को झगड़ना योग्य नहीं संतोष कर सदा प्रसन्न चित्त रहना चाहिये क्योंकि नारी का सब से बढ़ कर गहना पति है और पति को प्रसन्न रखना यही उसका धर्म है क्योंकि शास्त्र में लिखा है ॥

चौपाई

एकै धर्म एकै व्रत नेमा काय बचन मन पति पद प्रेमा

स्त्री का सब से विशेष धर्म कर्म पूजा पाठ व्रत नेम यही है कि छल छांड़ स्वामी की सेवा करे क्योंकि स्वामी के प्रसन्न रहने से सर्व देवता प्रसन्न रहते हैं क्रोधमुखी और झगड़ालू स्त्री अपने पति के चित्त को खेदित कर दोष भागी होती है और जो त्रियाचरित्र कर स्वामी को छल से सेवती है वह कोटिन बर्ष लग भयंकर नरकों में पड़ नाना प्रकार के दुःख भोग करती हैं पति कैसा ही क्यों न हो सदा उसी से प्रेम प्रीति करना योग्य है क्योंकि ऐसा कहा है ॥

चौपाई

वृद्ध रोगबस जड़ धनहीना अंध बधिर क्रोधी अतिदीना ।
ऐसेहु पति कर किये अपमाना नार पाव यमपुर दुख नाना ॥

सुख चाहनेवाली स्त्री को निष्कपट हो सदा प्राणपति की सेवा करनी योग्य है और पर पुरुषों को पिता भ्राता और पुत्रसम देखना उचित है किसी की सुन्दर बस्तु देख मन चलायमान कर पाप में पड़ना उचित नहीं उसका हाथ लगना अति कठिन है इसलिये ईश्वर की दी हुई बसुधा पर संतोष कर धन्यवाद करना चाहिये बहुधा ऐसा भी होता है कि दो जनों में अधिक प्रीति देख तीसरे को बुरा लगता है वह समय पा दोनों में फूट करा देता है जैसे मन्थरा ने केकई के मन में बिकार उत्पन्न कर रामचन्द्र को बनोबास कराया ऐसी बातों से सदा सावधान रहना चाहिये सहज ही किसी की बात पर बिश्वास कर धोखा खाना उचित नहीं किसी कारण से सास ससुर पति आदि की दृष्टि फिरी देखे तो कारण का मूल जान जैसे बने वैसे मनों में से बिरुद्ध रूपी वृक्ष को मूल से शीघ्र उखाड़ना चाहिये ऐसा न करे कि आप भी ऐंठ मेंठ कर

सूना हो बैठे क्योंकि जो पति के मन में गांठ पड़ गई तो जन्मभर दुःख भोगना पड़ेगा मन के बिषय में ऐसा कहा है ॥

दोहा

मन. मोती अरु दूध रस इनको यही स्वाभाव ।
फाटे से फिर न मिलें कोटिन करो उपाव ॥

बाज़ी स्त्रियों में लगालुतरेपन की बात होती है वे बहुधा इधर की उधर लगाया करती हैं और दोनों ओर की सैकड़ों गालियां खाया करती हैं तो भी पंच परमेश्वर से डर के इस बुरी टेव को नहीं छोड़तीं. हर एक की बात सुनकर मन में डाल रखना उचित है एक की सुनके दूसरे से कभी न कहना चाहिये जो ऐसा नहीं करतीं उनका बड़ा हलका प्रयोजन होता है और उनको कोई नहीं पतियाता ऐसे स्वभाव का मनुष्य सभों की दृष्टि में तुच्छ जाना जाता है इसलिये ऐसे कुबान से सदा डरना चाहिये बाज़ी स्त्रियों का चटोरा स्वभाव पड़जाता है और वे घर के मनुष्यों से छुपा कर ऊपरी लोगों के हाथों मनमानी बस्तु मंगा खाती हैं यह कुलक्षण निश्चय कर नारी के नाश का हेतु है इस निंदित बान से स्वभाव में अनेक बुराइयां उत्पन्न हो जाती हैं इसलिये इस टेव से बहुत ही बचना चाहिये इस प्रकार लीलावती ने उत्तम २ उपदेशों करके कलावती का स्वभाव अतिश्रेष्ठ बनाया उपरान्त तीसरी बरस कलावती का गौना हो गया वह सुशीला माता पिता से छूट ससुरे में रहने लगी और अपनी मधुरता और गम्भीरता से सास ससुर आदि घर के प्रत्येक मनुष्य को प्रसन्न रखने लगी घर का सब काम काज बड़ी सावधानी और चतुराई से करती बस भर सास जिठानी को नहीं करने देती थी ॥

बालक को मलिन बस्त्र और गहना पहराने का निषेध

जिठानी के तीन चार बर्ष का एक लड़का था उसके दिन भर में तीन चार बार मुंह हाथ धोती और सदा उजले कपड़े पहराती कभी मैला कुचैला न रहने देती एक दिन उसकी जिठानी बोली तुम इसके कपड़े कहां तक बदला करोगी यह कुलक्षण तुरंत मैले कर डालता है

कलावती बोली कि इसकी प्रकृति पहिले से धूल मट्टी में खेलने की पड़गई है. परंतु क्या करें बालक को मैले बस्त्र पहनाने से बड़ी हानि होती है क्योंकि मैल रोमरंध्रों को रोकता है पसीना नहीं निकलने देता इस कारण अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं बरन बालक की बुद्धि भी मलिन हो जाती है और बालक को मलिन देख लोग माता को फूहरपने का दोष लगाते हैं इसलिये बच्चों को सदा स्वच्छ रखना चाहिये और धूल मांटी के खेल से बचाइये कपड़ा कैसा ही मोटा टूटा फटा पुराना हो पर मैला कभी न रखना चाहिये क्योंकि एक तो मैला कपड़ा आप मैल में गलके जल्दी फटजाता है और दूसरे पहरनेहारे को रोगी करता है तीसरे उन कपड़ों से दुर्गंध निकलके नाक और मुंह के द्वारा ब्रह्मांड में पहुंच बुद्धि को बिगाड़ती है चौथे मलिन बस्त्रवाले को लोग अपने पास बैठालने में घिन करते हैं शरीर की आरोग्यता के लिये निर्मलता भी अमोल्य पदार्थ है यह उत्तम उपदेश जिठानी के मन में भागया कलावती उस लड़के के लिये अनं २ भांति की टोपी अंगरखी आदि बनाया करती और जहां कहीं नेक भी कपड़ा फटता उसको तुरंत सींदेती इस में नेक ढील न करती क्योंकि आलस करने से वह अधिक २ फटता जाता है और फिर शीघ्र काम का नहीं रहता इसलिये जहां कपड़े में खोंप चले उसे तुरंत ही सीना चाहिये यद्यपि कलावती बालकों को गहना पहराना अच्छा न जानती थी परंतु इस डर से जिठानी को नहीं रोक सकती कि कहीं उलटा समझ बुरा न माने कि मेरे लड़के का गहना इसे नहीं सुहाता पर तो भी उस से रहा न गया एक दिन बोली कि मेरी महतारी बालकों को गहना पहराना अति बुरा जानती थी और कहती थी कि जो मा बाप अपने प्यारे बच्चों को गहना पहराते हैं वे मानों हाथ से खोया चाहते हैं बहुधा देखने सुनने में आता है कि गहने के लोभ से दुष्ट मनुष्य अनदोष बालकों को मार डालते हैं फिर भी जान बूझके लोग अपने प्यारों का जी जोखों में डालते हैं यह बड़ी अज्ञानता की बात है यह सुन जिठानी बोली कि बिना आभूषण बालक शोभायमान नहीं लगता सभी लड़के गहना पहरे फिरते हैं जो भाग्य में ऐसा ही लिखा हो तो उसे कोई कैसे मेट सकता है मैं ने ऐसा सुना है ॥

कवित्त

होत उदोत प्रभाकर के दिशि पश्चिम तो कछु धोखो नहीं है ।
फूले सरोज पहारन मांहिं औ मेरु चले तो चले कबहीं है ॥
पावक शीतल होत समय इक मोतियराम बिचार कहा है ।
अंक मिटे न लिखे बिधि के यह बेद पुरानन मांहि सही है ॥

कलावती कहने लगी जिठानी जी आप तो वह कहावत करती हैं कि चलनी में गाय दुहे और दैयरा को दोष देवे ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि इसी कारण दी है कि वह भली बुरी बात को बिचार काम कर सके जब कोई जान बूझ बिष खालेगा वह अवश्य मर जायगा इस में दैव का क्या दोष है जिठानी ने कहा उसके भाग्य में बिष खाना ही बदा था कलावती हंसके बोली जो प्रत्येक काम के लिये ऐसा ही समझा जावे तो पाप पुन्य का भागी कोई क्योंकर हो सकता है किन्तु शास्त्र में ऐसा लिखा है ॥

चौपाई

कर्म प्रधान बिश्वकर राखा । जो जस करै सोतस फल चाखा ।

मनुष्य अपने ही कर्मों से भीत बनानेहारे के समान ऊपर को चलता है और कुआ खोदनेहारे की नाई नीचे को धसता है यह बात स्पष्ट है कि जो जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही तत्काल फल मिलता है मेरे पड़ोस में एक सुनारिन रहती थी वह अपने पुत्र को गहना पहरा देख २ अति प्रसन्न होती मेरी मा ने उसे कै बार समझाया कि अरी बावली गहना ही पहराने से अधिक दुलार नहीं जाना जाता तेरे जान तो प्यार है पर मेरी समझ में लड़के के जीव का जंजार है जो तू अपने प्यारे पुत्र की कुशल चाहे तो कभी गहना मत पहराया कर उसने कहना न माना एक दिन कोई दुष्ट भिखारी भीख मांगने आया और उस समय लड़का भी द्वार पै अकेला खेल रहा था भिखयारी इधर उधर देख लड़के को खिलौने का लोभ दिखा गोद में ले चंपत हुआ थोड़ी बार में लड़के की मा को सुध हुई पर वह वहां कहां था चारों ओर ढुढोंआ पड़ा और वह सुनारिन ब्याकुल

हो मेरी मा के पास दौड़ी आई मेरी मा ने कहा पहिले तो तू ने मेरा कहना नहीं माना अब इतनी व्याकुलता क्यों होती है बुद्धिमानों का वाक्य है कि जब तक आपदा न आवे तभी तक डरना चाहिये और जब आपत्ति आ ही गई तब धीर्य की फेंट बांध उपाय की चिन्ता करनी उचित है अब भी चारों ओर ढूंढने को बहुतसे मनुष्य दौड़ा दे उसने घरजा ऐसा ही किया वह दुराचारी गहने के लोभ से उस बच्चे को मारने के मनोरथ एक नाले में लिये जाता था इतने में एक मनुष्य की दृष्टि पड़गई उसने वहीं से ललकारके कहा अरे दुष्ट लड़के को कहां लिये जाता है यह सुन लड़के को पटक वह भाग उठा परंतु घबराहट से भागा न गया लोगों ने उसे तो पकड़ थाने में पहुंचाया और लड़के को उठाला उसकी मा से मिलाया उसकी मा उसे पा ऐसी प्रसन्न हुई मानों मृतक शरीर प्रान को भेंटा फिर तुरंत ही आके मेरी मा के पांवों गिरी और कहने लगी कि मैं ने तुम्हारे हितवचन का अनादर किया उसका फल पाया ही होता परंतु ईश्वर ने मुझ मूर्खी पर बड़ी दया करी मेरी मा बोली ईश्वर की ईश्वरता ऐसी ही दशा में देखी जाती है तुम्हारी पुन्याई कुछ अच्छी थी नहीं तो इन बूंदों दर्शनं दुर्लभ था अरी बहिन गहना ऐसी बुरी बलाय है कि जिसके लोभ में आ बहुधा अच्छे भी बुरा कर्म कर बैठते हैं फिर अधम मनुष्यों की कौन चलाई जिनके दया धर्म का लेस भी नहीं होता एक बार का मेरे मायके का प्रसंग है कि एक सेठ के घर एक पिसनहारी पीसने को नित्य आया करती थी सेठ ने उसे गरीब और भली मानस देख अपने पड़ोस में एक झोंपड़ी बनवा दी और रोटी कपड़ा भी दिया करता था वह भी घर की टहल पात आदि सब काम बड़ी सावधानी और धर्म के साथ किया करती थी कभी किसी बस्तु को देख उसकी मनसा डांमा डोल नहीं होती थी सेठ के घर के सब लोग उसका बड़ा बिस्वास मानते और अति धार्मिक जानते थे सेठ के एक तीन चार बरस का लड़का था वह उसी से अधिक हिला था और वह भी उसे प्राण सम प्यारा जानती थी एक दिन गहने ने उसे लोभ में फांस मति चलायमान कर दी उस रांड के हृदय में ऐसी दुष्टता आई कि गहने के लिये

उस बच्चे को मार झोंपड़ी के कोने में गाड़ दिया थोड़ी देर पीछे सेठानी ने पिसनहारी से पूछा कि लड़का कहां है उसने उत्तर दिया कि अभी तो मैं घर ही में छोड़ गई थी मैं नहीं जानती कहां है यह सुन सेठ के घर में बड़ी हड़बड़ी मची और चारों ओर मनुष्य ढूंढ़ने को दौड़े इतने में पुलास के लोग भी आ पहुंचे पूछा ताछी करने से उनको पिसनहारी पर शंका हुई यद्यपि वह हाथ नहीं धरने देती थी परंतु पाप कब छिपाये छिपता है उसके मुंह पर दरसता था पुलीस के लोग तो बड़े चालाक होते हैं मार पीट कर तुरंत बकुरा के उसकी झोंपड़ी में से लड़के की लोथ ऊखाड़ ला सेठ के आगे धरदी और उस दुष्टिनी को हवालात की कोठरी में बंद कर दिया सेठ पुत्र को देखते ही शोकसागर में डूब गया और मूर्छित हो भूमि पर गिर पड़ा यह दशा देख सेठानी मन में बिचारने लगी कि पुत्र तो गया सो गया अब पति रहे सो युक्त करनी चाहिये क्योंकि पति के रहने से पुत्र की फिर भी आसा हो सक्ती है यह बिचार वज्र की छाती कर रोना पीटना छोड़ धीरज की फेंट बांध वह चतुर स्त्री अपने शोहर को समझाने लगी हे स्वामी भगवान् को भूल मोह में फंस ऐसा क्या बिलाप करते हो उत्पन्न होते ही जीव को अनित्यता ऐसे गोद में उठा लेती है जैसे माता से पहिले दाई फिर यहां शोक का क्या काम है बड़े २ राजा बादशाह सेना बल बाहन के साथ बिलाय गये जिनके वियोग की भूमि अब तक साक्षिणी स्थित है और भी शरीर अपाय के समीप है संपत्ति आपत का घर से मिलना बिछुरन के संग सब उत्पन्न होनेवाले एक दिन मरने को हैं यह शरीर प्रतिक्षण छीजता नहीं दिखाई देता है जैसा मट्टी का कच्चा घड़ा पानी में क्रम २ गलता है ऐसे ही शरीर को जानो और भी जैसे बधयोग्य मनुष्य प्रत्येक पद के उठाने पर बधभूमि के निकट पहुंचता जाता है ऐसे ही मनुष्य प्रतिदिन मृत्यु नियराता जाता है रूप यौवन जीवन संपत्ति सब अनित्य हैं बुद्धिमान इनका मोह नहीं करते संसार में जीवों का समागम ऐसा है जैसे थोड़ीबार को नाव में मनुष्य इकट्ठे होकर फिर भिन्न २ हो जाते हैं संयोग बियोग का और जन्म मौत का आगम जनाता है जैसे नदी के सोते बहकर जाते और फिर लौट के नहीं आते ऐसे ही जिस

पहिली रात को जीव गर्भ में आता है उसी समय से बेरोक काल के समीप चला जाता है इसलिये "संसार को बिंचार यह अज्ञान का प्रपंच शोक त्यागना ही उचित है जो अज्ञान कारण नहीं है और बियोग ही कारण है तो ज्यों २ दिन बीतते जाते हैं त्यों २ क्यों. शोक घटता जाता है इसलिये मन को समझा शोक की चर्चा छोड़ो बिना बान अंग में घाव करनेवाले शोक की सुध न करना यही बड़ी औषधि है ज्यों २ सुध करोगे त्यों २ अधिक बिषाद में पड़ोगे सेठानी के अमृतरूपी बचन सुन सेठ की मूर्छा जागी और उठके कहनेलगा कि जो ऐसा ही है तो इस गृह-रूपी नरक में रहना वृथा है बन में जाके तप करूंगा सेठानी ने कहा महाराज रागियों को बन में भी सुख नहीं होता जो इंद्रियों को बस में करके राग छोड़ उत्तम कर्म करता है उसको घर ही तपोबन के समान सुख देता है क्योंकि मनुष्य जहां चाहे वहां रहके अच्छे धर्म कर्म कर सकता है कुछ चिन्ह धर्म का हेतु नहीं है ऐसा कहा है आत्मा नदी जिसका जल सत्य तट शील तरंग दया और संयम पुन्यतीर्थ है उस में स्नान करना चाहिये पानी से हृदय शुद्ध नहीं होता जिनका भोजन जीवन के हेतु मैथुन संतान के अर्थ और बोलना सत्य बचन के लिये है वे ही इस दुस्तर संसार को पार हो जाते हैं स्वाद की इच्छा करनेहारे दुःख ही को सुख मान रहे हैं परंतु बिचार के देखो तो सुख का लेश भी नहीं है क्योंकि यह संसार जन्म जरा मृत्यु व्याधि बेदना से घिरा पड़ा है इस में केवल भगवत नाम ही का आधार बड़ा है यह मोह मुद्गर उप-देश सुन सेठ का मोह दूर हुआ और समय अनुसार कार्य कर अपने धंधे में लगा सेठ सेठानी तो लड़के से हाथ धो बैठे और उस पिसन-हारी को फांसी दी गई यद्यपि ऐसे दुराचारी मनुष्यों को सदैव अति कराल दंड दिया जाता है परंतु फिर भी वे अधम दुष्कर्म को नहीं त्यागते क्योंकि पाप का बाप लोभ है इस में पड़के अच्छे भी अनर्थ कर बैठते हैं इसलिये उचित है कि अपने प्यारे बच्चों को गहना न पहना. जीव. जोखों में न डालें सुनारी ने कहा मैं ने कान पकड़ा अब अपने लाल को कभी गहना न पहनाऊंगी ॥

यह कथा सुन जिठानी के भी कान खड़े हो गये और उसके मन में ज्ञान उपजा कि यह बात बहुत ठीक है कलावती की प्रशंसा कर कहने लगी कि यथार्थ बालकों को गहना पहराना उचित नहीं तुरंत लड़के का गहना उतार रक्खा और जब कभी तिथि त्योहार को पहराती तो बड़ी चोकसी रखती और फिर उसी दिन उतार लेती और रख छोड़ती कलावती प्रत्येक काम में चतुराई और प्रवीनता दिखाती सब घर के लोग उसकी बड़ाई करते थे भोजन ऐसी स्वच्छता से स्वादिष्ट बनाती कि खानेवालों को दूसरे के हाथ की रंधी बस्तु कभी न भाती लोगों को ऐसा चसका पड़ गया कि उसी के हाथ की रसोई नित्य जीमते थे जब कभी उसकी जिठानी भोजन बनाती तो खानेहारे बिछु-राते थे यह दशा देख उसको बुरा लगता था यद्यपि जिठानी कलावती से सब प्रकार प्रसन्न थी परंतु यही कारण अप्रसन्नता का हुआ ॥

कपट और खुट सियानपन का फल

कि घर के लोग कलावती के आगे उसे फूहर बर्तते थे इस हेतु कलावती अपनी जिठानी की आंखों में खटकने लगी यद्यपि कलावती कभी किसी बात का अभिमान न करती सदैव बड़ी आधीनता से रहती परंतु तो भी जिठानी को नहीं सुहाती थी संसार में सब अपनी २ प्रभुता चाहते हैं परंतु जो औरों को देखके सिहाते हैं वे बहुत थोड़े हैं उन्हें ही धन्य और प्रशंसा योग्य कहना चाहिये जिठानी के मन में दिनों दिन कर्ष बढ़ने लगा और कलावती से बैरभाव कर जला करने लगी कवि का बचन है ॥

दोहा

जो जन ईर्षा धारि मन जरत देख पर हित ।
कैसे ऐसे मनुज को शीतलता लह चित्त ॥

जिठानी इस चिन्ता में हुई कि किसी प्रकार कलावती को घर के लोगों से खट्टी बनाना चाहिये एक दिन अपने स्वामी हरदत्त से कहने लगी कि आप को तो जीभ के स्वाद के आगे कुछ नहीं सूझ पड़ता और

मुझे लहुरी की सैकड़ों बातें सहनी पड़ती हैं वह रोज़ बरबराया करती है कि मुझको सभों ने दासी ठहराया है सब मुझी पर आज्ञा किया करते हैं और प्रतिदिन मेरा ही मूंड़ चूल्हे में दिया करते हैं क्या घर में मैं ही अकेली रहती हूं जो सब लोग मेरे ही ऊपर दते रहते हैं और पराया मूंड़ पसेरी बराबर समझते हैं सो ऐसी बातें मुझ से तो नहीं सुनी जातीं जो हाथ पांव से अपाहिज हो सो सुने आज तक क्या लहुरी ही बहू घर का काम काज कर जाती थी परंतु अब कुछ मेरा बस नहीं क्योंकि मेरा काम आप को नहीं भाता इसलिये अपाहिज से भी गई बीती हो सुना करती हूं यह सुन कृष्णदत्त का भाई हरदत्त सन्नाटे में हो गया और बारम्बार मन में बिचारने लगा कि मुझको तो लहुरी का शील स्वभाव देख यह बात नहीं भ्यासती परंतु इसको भी एका एकी झूठी नहीं कह सक्ता अपने स्वामी की ऐसी दशा देख जेठी और भी रो २ के बातें बनाने लगी कि आप छोटी को बड़ी सूधी सच्ची मानते हैं परंतु छोटी सब से खोटी है उसके गुन मेरा ही जी जानता है हरदत्त ने कहा जो ऐसी ही बात है तो लहुरी से बहुत काम मत लिया करो और आज से रोटी पानी भी तुम्हीं किया करो हरदत्त ने यद्यपि अपनी भावज से कुछ कहा सुना नहीं परंतु हेत अहेत छिपाये कब छिपता है कवि का बचन है ॥

दोहा

नैना देत बताय हैं सब को हेत अहेत ।
जैसे निर्मल आरसी भली बुरी कहदेत ॥

कलावती जेठ की दृष्टि फिरी हुई देख मन में बिचारने से जान गई कि हो न हो जिठानीजी का करतब है जेठजू का कुछ दोष नहीं छल छंद में आके पण्डितों की भी मति चलायमान हो जाती है धूर्त्तता अति कठिन है पर क्या चिन्ता है सत्यसत्य ही है और झूठ झूठ ही है एक दिन दूध का दूध और पानी का पानी होगा और जिठानीजू को भी अपने किये कर्मों का फल मिलेगा यद्यपि कलावती अपने मन को समझाती और उदासी को छिपाती थी परंतु बुद्धिमानों के आगे छिपना कठिन था कहा है ॥

दोहा

चतुरन से कब छिप सके अंतरगत की बात ।
कहे वैद्य जिम रोग की कर में गहिके हात ॥

कृष्णादत्त अपनी प्यारी के मन की गति जान बोला कि अपने उदास रहने का कारण कहो कलावती ने पति से झूठ बोलना उचित न समझ कर कहा कि जो घर के लोग मेरे काम की प्रशंसा करते थे वही प्रशंसा मेरी बैरिन होगई कवि का बचन है ॥

दोहा

कहीं २ गुन से अधिक उपजत दोष शरीर ।
मीठी बानी बोल कर परत पींजरा कीर ॥

उसने अपनी जिठानी का सब वृत्तांत कह सुनाया और बोली कि डुकरिया मरे का सोच नहीं परंतु यम घर देख गये यही चिंता है जेठजू की नाईं कहीं औरों के मन में भी बिकार उत्पन्न न हो जावे कृष्णादत्त बोला यह संभव नहीं कलावती ने कहा महाराज ऐसी मत कहो बड़े २ चतुर धोखा खाजाते हैं जैसे गौरीदत्त तीन ठगों से ठगाया गया कृष्णादत्त बोला यह कैसे उसने कहा ॥

गौरीदत्त अति चतुर ब्राम्हण किसी गांव से एक बकरा मोल ले यज्ञ को अपने घर लिये जाता था मार्ग में तीन ठग मिले उन्हों ने कहा कि छल की उत्कर्षता तब है जब इस बामन का छागा ले लिया जावे सम्मतिकर तीनों जने कोस २ के अंतर पर राह घेर जाबैठे जब गौरीदत्त पहिले धूर्त्त के पास पहुंचा तब वह बोला देवता कुत्ता कांधे पर धरे कहे को लिये जाते हो उसने कहा स्वान नहीं है यज्ञ का छागा है बलिदान को लिये जाता हूं इस पीछे दूसरे के पास पहुंचा उसने भी वैसा ही कहा तब तो गौरीदत्त को भ्रम हुआ और बकरे को कांधे से उतार भूमि में रख बारंबार देखने लगा कि यह तो बकरा ही है कांधे पै धर के फिर आगे चला और तीसरे ठग के पास पहुंचा उसने कहा ब्राह्मण कूकर को क्यों कांधे पर धरे लिये जाता है यह सुनते ही गौरीदत्त की मति चलायमान हो गई और निजमति का भ्रम जान बकरे को छोड़ स्नान

ध्यान कर अपने घर गया और ठगों ने प्रसन्न हो उस बकरे को खाया इसलिये कहती हूं कि छली मनुष्य कठिन होते हैं यह सुन कृष्णदत्त के मन में चिंता हुई और निश्चय करने पर कलावती का कहना सब ठीक २ निकला तब कृष्णदत्त बिचारने लगा कि भावज तो जान बूझ उसे झूठे लक्षण लगाती है फिर वे काहे को समझाने से समझेंगी कहा है ॥

दोहा

जान बूझ अजुगत करै तातें कहा बसाय ।
जागत अरु सोवत रहे ताहि को सके जगाय ॥

यह बिचार सदा सोच में रहने लगा अपने भाई की दशा देख हरदत्त भी खटके में पड़ा और भेदभाव लेने से उसको मालूम हुआ कि मेरी पतिनी ने अनकाम झूठा दोष लहुरी को लगाया है तब उसके मन में भी ठीक यही जची कि लहुरी निर्दोष है यह केवल मेरी घरनी ने प्रपंच रचा है यह जान हरदत्त का मन पतिनी की ओर से अत्यन्त हट गया क्योंकि किसी ने कहा है ॥

सोरठा

जल पै सरस बिकाय देखो प्रीति की रीति भलि ।
बिलग होय रस जाय कपट खटाई परत ही ॥

जिठानी अपने पति का मन फिरा देख जान गई कि हो न हो मेरा कपट स्वामी पर खुल गया इसी से उनका मन फिर गया झूठ सदा छिपा नहीं रहता कभी न कभी खुल ही जाता है मैं ने अच्छा न किया जो एक तो निर्दोष को दोष लगाया दूसरे स्वामी से झूठ बोली यह जैसा महापातक बन पड़ा वैसा ही भोगने पड़ा रात दिन पति के वियोग से व्याकुल रहती और हर एक बात में झुंझलाया करती यह दशा देख उसकी सासने ढूंढ़ कर सब तात्पर्य को जाना और रामसेवक से कहा कि घर में ऐसा २ बिरुद्ध फैल रहा है रात दिन का दांता किल २ अच्छी नहीं कहा है ॥

चौपाई

जहां सुमति तहां संपति नाना ।
जहां कुमति तहां बिपति निदाना ॥

रात दिन खांडा बजा भली पर छाती बजी भली नहीं रामसेवक सुनके सोच में हुआ और सब बहु बेटों को एक ठौर बैठाके एक २ सींक देकर तोड़ने को कहा सभों ने उन सींकों को तुरंत तोड़ डाला फिर एक मुट्ठा सींकों का दिया वह किसी से भी न टूटा तब रामसेवक बोला हे बेटो यथा की ऐसी बात है जो यथा बांधे रहते हैं उनका बैरी कुछ नहीं कर सक्ते और बेयथावाले को सहज ही जीत लेते हैं इसलिये उचित है कि समूह बांधके रहो एके से पल्ला भारी रहता है फूट से हलका प्रयोजन होता है कवि का बचन है ॥

दोहा

जो आपस में बैर कर मिलें और के साथ ।
सो पावत हैं बहुत दुख पड़ बैरी के हाथ ॥

निज कुल का थोड़ा भी संग्रह श्रेय है चांवल भूसी से भी छूटे नहीं जमते और तिनके रस्सी की दशा में हो हाथी से भी नहीं टूटते यह सुन हरदत्त बोला कि आप बहुत ठीक कहते हैं परंतु रात दिन का झगड़ा क्योंकर मिटे कृष्णदत्त की माता बोली कि मैं ने बड़ी बहू के भरोसे पै सब काम काज छोड़ दिया था इस से इतना बखेड़ा मच गया अब मैं गृहस्ती का बोझ अपने ही सिर फिर लादूंगी अब की बार तुम सब सुचित्त हो जाओ यह बात सभों ने मान ली क्योंकि किसी के मन में छल तो था ही नहीं केवल जेठी का चित्त बिगड़ रहा था परंतु उसने भी यह बिचार कुछ न कहा कि एक तो बुरी हो ही रही हूं और भी बुरी हो जाऊंगी सभों ने बड़े बूढ़ों के कहे अनुसार बिषाद बिसार अपना २ काम करना प्रारंभ किया परंतु जेठी के हृदय की गांठ न खुली थी वह अपना समय बिचार रही थी कृष्णदत्त की माता घर के काम काज बड़ी सावधानी से यथायोग्य सब से लेती थी और किसी से लड़ाई झगड़ा न होने देती थी कुछ दिनों पीछे रामसेवक और उसकी पतिनी का परलोक हो गया हरदत्त और कृष्णदत्त

ने बिचारा कि बूढ़े मा बाप आगे पीछे एक दिन मरने ही को थे इनके लिये शोक करना वृथा है अब धीरज की फेंट बांध समय अनुसार कार्य करना योग्य है यह बिचार मा बाप की क्रिया कर्म कर अपने २ धंधे में लगे इसके पीछे कलावती के एक पुत्री उत्पन्न हुई तब तो जेठी ने दाव पाके अपने पति से कहा कि यह कन्या घर का सब धन संकेल ले जायगी इसलिये इसके ब्याह से पहिले ही बांट चूंट हो जावे तो अच्छी बात है यह सुन हरदत्त रिस हो बोला कि अरी घरफोड़ू अभी तक तेरे मन की खुटक नहीं गई कन्या के ब्याह में हमारा क्या धन लग जावेगा क्या उसका भाग्य नहीं है जब धन को जाना ही होगा तब वह किसी के रोके न रहेगा सैकड़ों राह से चला जावेगा तू ने थोथा सोच वृथा किया यह सुन जेठी अपना सा मुंह ले चुप हो बैठी पर मन में तो यही गांठ बंधी थी कि जुदा ही चूल्हा रोपूंगी दिन रात लड़ने को उद्यत रहा करती थी परंतु कलावती सब सहा करती थी कभी मूर्ख स्त्रियों की नाईं मुंह जोड़ लड़ाई नहीं नांध बैठती थी और न कभी उत्तर देती थी कवि का बचन है ॥

दोहा

सुनके दुर्जन के बचन हुई रहिये चुप चाप ।
करे जो समता तासु की नीच कहावे आप ॥

जेठी आप ही बक बका मांथा मार चुप हो बैठती थी और रिस रोष कर अपना हृदय आप ही जलाती थी कलावती कभी ईर्षाभाव न करती थी जिस प्रकार पहिले उस से और उसके लड़के से प्रेम प्रीति करती थी उसी तरह इस दशा में भी बर्त्तती थी वह अपने स्वभाव को सदा यथावस्थित रखती थी कभी अपने चित्त में खेद न करती जो मनुष्य जितनी औरों की सहने की गौं रखता है उतना ही अधिक सुख में रहता है जब हरदत्त ने देखा कि यह मूर्ख अपनी कुटेव किसी तरह नहीं छोड़ती तब मन में बिचार किया कि स्त्री को मार कूट करना भी अनुचित और महापातक है और रात दिन का कलह भी अच्छा नहीं कहा है कि (सौ सह लीजे पर कलह न कीजे) इसलिये ऐसा मनसूबा करूं

कि सांप मरे न लाठी टूटे यह सोच कृष्णदत्त से सम्मति कर दोनें के चूल्हे जुदे २ करदिये और सब हाल रोज़गार ज्यों का त्यों साझे में रक्खा इस जुगत से लड़ाई कुछेक ठंडी पड़ी कुछ दिनें पीछे हरदत्त का पीछा हो गया तब तो कृष्णदत्त घबराया कि अब मैं अकेला इस गृहस्ती के बोझ के क्योंकर उठाऊंगा यह सोच व्याकुल हो अचेत हो गया देखो संसार में न कोई किसी का पुत्र है न कोई किसी का पिता है केवल मतलब का ही नाता है कृष्णदत्त भाई के लिये नहीं रोता था किंतु अपनी सहायता के हेतु व्याकुल होता था मनुष्य को उचित है कि थोड़े से जीवन के हेतु थोथे धंधों में फंसके कभी बुराई आदि अधर्मों की ओर न झुके सदा धर्म ही में रुचि रक्खे कलावती ने उत्तम उपदेश से पति को सुचेत कर धीरज बंधाया कहा है ॥

चौपाई

धीरज धर्म मित्र अरु नारी आपद काल परखिये चारी ॥

हरदत्त की बरसी भी न होने पाई थी कि जेठी ने बांट चूंट का झगड़ा मचाया कृष्णदत्त ने सब कुछ समझाया परंतु वह अज्ञानरूपी मदिरा की मतवाली काहे को मानती थी कहा है ॥

(रांड सांड़ और अरना भैंसा जब बिचलें तब होवे कैसा)

जब कृष्णदत्त ने देखा कि यह किसी तरह नहीं मानती तब घर में जो कुछ माल टाल था आधा २ सींक कासा खपा बराबर बांट दिया जो लोग धोखे धड़ी और छल बल बल से अंश मार बैठते हैं वे मनु का धन कर अपना लोक परलोक बिगाड़ते हैं भाई का अंश रखना बहुत बुरा है जेठी अपने बेटों को और माल टाल को लेकर जुदी हो बैठी और साहस की फेंट बांध चर्खा पोनीकर खाने के योग्य पैदा करलेती कभी गांठ का न खाती परंतु खुट सियानी बड़ी थी इसलिये देन लेन छिपा चोरी से करती थी इस में धुतारों की खूब घात लगी ब्याज का लोभ दिखा सब धन सकेल लेगये शेष पचास रुपये रह गये थे एक धूर्त्त ने यह जान पांच रुपये उसके हाथ पै धर दिये और कहा कि पचास

रुपये जो तेरे पास धरे हैं वह मुझे एक महीने को दे दे घर में धरे २ क्या बढेंगे जेठी ने लालच में आके उसे दे दिये दो चार दिन पीछे एक रुपया देकर उन पांचों को भी लेगया ईसी तरह एक दिन एक टका देकर उस रुपये को भी लेगया और ऐसा कहगया ॥

दोहा

पांच पचासे लेगये पांचे लेगयो एक।
एक टकोना रह गया लेखे करति अनेक ॥

कहा है कि लोभी के गांव में बगड़ा भूखा नहीं रहता जेठी रात दिन हिसाब किताब ही किया करती थी परंतु रुपया आंखों से नहीं देख पाती थी कहावत है ॥

(कागद देखे घर रहे घर देखे घर जाय)

लेखा जोखा तो सैकड़ों का था परंतु घर में कौड़ी भी न थी कुछ थोड़ासा गहना गांठा बचा था एक दिन एक पाखंडी जोगी आया उसका दंभ देख जेठी ने बड़ा सिद्ध जान अपना सब दुखड़ा कह सुनाया उसने कहा घबराओ मती तुम जितना गहना मेरे पास लाओगी सब दूना कर दूंगा जेठी सुनके बड़ी प्रसन्न हुई और उसको बड़े आदर से टिकाया कुछ गहना उसके घर में था कुछ लालच के मारे अड़ोस पड़ोस से मांगलाई रात को जोगी ने चौका दे धूप जगाई और एक कोरी हांडी और गहना मंगवाया और उस गहने को थैली में भर हथफेर से वैसी ही थैली अपने पास की जेठी के सामने हांडी में धरदी और गहने की थैली चट उड़ाली और जेठा से कहा कि इस हांडी को यहां गाड़े देता हूं भोर नहा धोके खोदूंगा इस पीछे जोगी तो बाहर अपने आसन पर आ थोड़ी देर में चंपत हुआ और जेठी उसी हांडी के पास पडकर सोरही भोर होते ही बाहर जाके देखने से जाना गया कि बाबाजी झोली झंडा लेके चंपत हुए तब तुरंत उन्हीं पांवों हड़बड़ाके लौटी और हांडी में से थैली काढ़ देखे तो उस में गहने के पलटे कंकर पत्थर निकले उन्हें अपने मांथे से मार रोने लगी यह सुनते ही जिनका गहना मांग लाई थी वे

तगादे को आपहुंचे उनको बासन भड़वा बेचखोच के चुकाया जो धर्मी थे उन्हों ने तो अपनी पुरी जमा ली और अधर्मियों ने दस के माल के बीस लिये इस प्रकार घर की सब जमा जथा गवां हाथ धो बेठी और मारे सोच के अपना उद्योग भी छोड़ बेठके भूखों मरने लगी जिस से अपना लेना मांगती थी वह उलटी आखें दिखाता था और सेकड़ों बातें बताता था परंतु कौड़ी हाथ से नहीं छुआता था जेठी ने जैसा खुट सियानपन किया वैसा फल पाया नीति का वाक्य है कि बालपन में पिता और युवावस्था में पति और बुढ़ापे में पुत्र रक्षा करता है स्त्री को किसी अवस्था में स्वतंत्र रहने योग्य नहीं कलावती ने अपनी जिठानी की दुर्दशा देख कृष्णदत्त से कहा कि स्वामी जेठी ने मूढ़ता से सब धन गवां दिया अब इधर उधर बायबेला करती फिरती है यह बड़ी नामोसी की बात है सब लोग तुम्हीं को नाम धरेंगे इसलिये उनको घर में बेठालो संसार में उसी का जन्म सफल है जो अपने कुटुम्बियों और दीनों को पाले अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है जिस से किसी का कुछ उपकार न हो बकरी के कंठ थन के समान संसार में उसका होना और न होना बराबर ही है इस जगत में सब लोग मूठी बांधे आते हैं और हाथ पसारे जाते हैं न कोई कुछ लेके आता है न कोई कुछ लेजाता है सब जहां का तहां रह जाता है केवल पाप पून्य संग जाता है और यश अपयश संसार में रह जाता है इसलिये धर्म और यश की सदा अभिलाषा रखनी चाहिये कवि का बचन है ॥

कवित्त

सोने को शरीर जा में लोह की न लागी कील ।
मोह की नदी पै बैठ कब लग अठिलावोगे ॥
सदा न बनी रहे बिगड़ जाय कर सी ।
हाथ पांव झाड़के धनी के पास जावोगे ॥
तातें भजन कर लीजिये भगवंतजी को ।
आठों याम जाय नर यश तें पछतावोगे ॥
जस के नगारे बजा ले संसार में ।
लाद लिये आये कहा लदा लिये जावोगे ॥

इसलिये मैं प्रार्थना करती हूं कि जेठी के आचरणों पर कुछ न ध्यान दीजे अपने कुल की प्रतिष्ठा पै दृष्टि कीजे कृष्णदत्त अपनी पतिनी के नीति युक्त हितकारी बचन सुन गदगद हो बोला कि प्यारी जो तुम्हारी ऐसी इच्छा है तो तुम्हीं जेठी को समझाके घर में लेआओ कलावती यह सुन प्रसन्न हुई और अपनी जिठानी के पास मनाने को गई जेठी ने इसे देखते ही आंख मूंह चढ़ाया परंतु कलावती के मन में कुछ मान अपमान का बिचार न आया पास बैठ पांव लाग बोली कि जिठानी जी आप के घराने की बड़ी नामना चली आती है इसलिये बिनय करती हूं कि आप घर में चलके बैठें और अपने देवर पै और मुझ पर आज्ञा किया करें आप की आज्ञा से कोई बाहर न होगा आप अपने मन में कुछ और बिचार न कीजे मुझे दासी समझ सब काम लीजे जेठी ऐसे कोमल और मधुर बचन सुन मन में बड़ी लज्जित हुई कि मैं ने तो इसके साथ बड़ी २ बुराइयां करीं और यह ऐसी सुशील है कि इस कुदशा में उलटा मुझे मनाने आई अब हट करना उचित नहीं कवि का वचन है॥

दोहा

अधिक न हट कर हट बढ़े बात न करिहै कोय।
ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों त्यों गरुई होय॥

मन में समझ सोच घर गई और पछतावा करने लगी कि मुझ मूर्खा ने जुदी होके सब धन बारह बाट कर दिया और अतिक्लेश उठाया कलावती उसकी दशा देख बोली जो कुछ होना था सो हो चुका अब वृथा सोच करने से क्या; सबेरे का भूला सांझ तक घर आवे उसे भूला नहीं कहते जेठी के सिर में लग चुकी थी बड़े प्रेम प्रीति से रहने लगी जब तक मनुष्य के मूंड में नहीं लगती तब तक मत ठिकाने नहीं आती अब वही जेठी दिन २ प्रीति बढ़ाने लगी कृष्णदत्त भी घर की बूढ़ी बड़ी समझ बड़ी कान मर्याद करता और अपने भतीजे को विद्या गुण सिखाने में अतिश्रम करता उत्तम मनुष्यों के मन में बिकार नहीं रहता है अपने भतीजे को भाई की जगह समझ के अति प्रीति करता था॥

और उदारता से करने लगे यह देख कलावती बोली महाराज जो लोग आनंद में मगन हो धन और समय को योथे कामों में लगा देते हैं वे पीछे समझ सोच कर बहुत पछताते हैं इसलिये इन दोनों पदार्थों को ऐसे काम में लगाना उचित है कि जिस से उत्तम फल मिले धन बड़ी कठिनता से मिलता और समय ऐसा अमोल है कि चाहो जितना धन खर्च करो परंतु जो छिन निकल जाता है वह फिर हाथ नहीं आता है यह सुन दोनों को ज्ञान हुआ और फिर बिचारांश के साथ सब काम किया कलावती कुत्ते की नींद सोती और छिन २ पर अपने अचेत बच्चे की सुधि लेती क्योंकि नींद में बालक के दबने का और दूध न पिलाने से कंठ सूखने का बड़ा भय रहता है माता के कुपथ्य भोजन से दूध पीनेहारे बालक को विकार हो जाता है इसलिये वह चतुर स्त्री कभी अपनी जीभ का स्वाद न कर बालक को खेद न देती सर्दी गर्मी आदि सदा बचाये रहती यद्यपि बच्चे की बड़ी सावधानी रखती थी परंतु तो भी एक दिन वह बीमार हो गया उसे देख कृष्णदत्त घबराया और अनेक झाड़ा फूंकीवालों को बुला लाया यह दशा देख के कलावती बोली कि इन पाखंडियों के ठोंग धतूरे से कुछ प्रयोजन नहीं सरता बहुधा मूर्ख स्त्रियों को धोखा देने को और ठगने को गुंडे और ठग मनुष्य झाड़ा फूंकी का काम सीखते हैं और छुद्र कर अपने को बड़ा गुनी प्रगट करते हैं परंतु यथार्थ में यह बात मिथ्या है विश्वास योग्य नहीं मैं ने एक बार देखा कि एक भूखे मरते ब्राह्मण ने एक अद्भुत प्रपंच रचा उसने कहीं से देवी की मूर्त्ति लाकर अपने द्वार पै नीम के वृक्ष की जड़ में गहरी कर गाड़ दी और कुछ दिनों पीछे अड़ोस पड़ोस के लोगों से कहने लगा कि मुझे कई दिन से स्वप्न में देवी जी दिखाई देती हैं और कहती हैं कि मैं तेरे नीम के चबूतरे में तुझ पर प्रसन्न हो हिंगलाज से आई हूं सो तू नीम की जड़ के पास पांच हाथ खोद के मुझे निकाल यह सुन कई मनुष्य उसके पीछे पड़े कि खोदो परंतु वह बस्ती में चर्चा फैलने के लिये ऊपरी मन से नहीं २ कर ढीली छोड़े था कहावत है कि मन भावे और मुड़िया हिलावे निदान एक दिन बोला कि तुम नहीं मानते हो तो खोद डालो चौंतरा खोदने का लगा लगते ही सैकड़ों तमाशगीर इकट्ठे

हो गये सब के साम्हने जितने गहरे पर वह बताता था सच मुच उतने ही गहरे पर अति सुंदर देवी की मूर्त्ति निकली यह देख सभी बस्ती में रौला मच गया और सेकड़ों रुपया भेट पूजा का चढ़ने लगा दूर २ से यात्री आने लगे बामन का घर चेत हो गया और देवी का सुंदर मठ बन गया नित्य ही मेलासा लगा रहता था एक दिन पलटन के तिलंगे आनिकले उन्हों ने एक बनिये से कहा कि हमें टिकने को कोई जगह बताओ उसने कहा यहां कोई जगह नहीं है केवल मेरा एक घर ख़ाली पड़ा है परंतु उस में प्रेतबाधा के कारण कोई टिक नहीं सक्ता सिपाही बोले तुम दिखाओ सम उसी में टिक रहेंगे उसने ताला खोल टिका दिया आधी रात को क्या देखते हैं कि एक स्त्री बाल छिटकाये नगिन तलवार लिये आंगन में घुमा रही है सब जने सजग हो मंसूवा कर दौड़ के उसे पकड़ लिया तब तो वह छलिन पांवों पड़ने लगी और कहने लगी कि इस व्योहरे ने जोरावरी मेरा घर नीलाम करा ले लिया है इस जलन से यह स्वांग कर इस घर में रहनेवालों को डराके निकाल देती हूं कि हार मानके फिर मुझ को देवे परंतु अब में ऐसा कभी न करूंगी उन लोगों ने उसकी दीनता पै दया कर प्रतिष्ठा भंग करना उचित न जान से गंद प्रतीति ले छोड़ दिया वह तुरंत छत पर चढ़ अपने घर में उतर गई सिपाहियों ने भोर होते ही चलने की तैयारी की और बनिये से कहा अब तुम खुशी से इस घर में रहा करो कभी किसी बाधा का खटका न होगा यह सुन वह प्रसन्न हो हाथ जोड़ बोला कि आज मेरे ही ऊपर कृपा करो और यहां देवी जी प्रगट हुई हैं उनका मेला देखो उन्होंने कहा अच्छा बनिये ने अति आदर से महमानी करी कुछ दिन चढ़े वे लोग देवी जी के दर्शनों को गये वहां देखते क्या हैं कि बड़ी धूम धाम हो रही है कोई होम करता है कोई बकरा चढ़ाता है कोई ढोल बजाता है कोई गीत गाता है कोई त्रिशूल लगाती है कोई चाबुक हिलाता है उसी समय नीच जात की पांच छः स्त्रियां मालिन कहारिन आदि सिर हिलाने लगी और कहने लगीं कि देवी हमारे सिर आई हैं कोई कहती थी कि अब के बर्ष रोग अधिक फैलेगा कोई कहती थी पानी बहुत बरसेगा इसी प्रकार नाना भांति की बातें बनाती थीं उन्हें घूमते देख बहुतेरी मूर्ख स्त्रियां

हाथ जोड़ २ आगे आबैठीं और अपना दुखड़ा कहने लगीं कोई बोली माता मेरा पति कब आवेगा किसी ने कहा मेरे लड़के का ब्याह कब होगा किसी ने धन मांगा किसी ने पुत्र याचा इसी तरह सब अपनी २ कहती थीं और वे मूंड हिलानेवाली भी जैसी की, तैसी बताती थीं यह दशा देख वे तिलंगे आपस में कहने लगे कि देखो इन्हों ने कैसा ढोंग फैलाया है बड़े २ ऋषि मुनि पण्डित आदि किसी के शीश देवी देवता को आते देखा सुना नहीं पर इन मलेच्छियों के मूंड देवी भली आगयी आपस में मंसूबा कर और सिद्ध साधक बन दो तीन जने कूदने फांदने लगे और चीख २ के कहने लगे कि उन घूमनेहारियों को हमारे पास लाओ वे सुनते ही घूमना तो भूल गईं और थर थर कांपने लगीं उन लुंगाड़ों ने ऐसा रौला मचाया कि सब मेला तमाशे आया और घूमनेवाली ऐसी जी छिपा के भागीं कि उनका पता भी न पाया यह दशा देख सब तिलंगे ठट्ठा मार २ हंसने लगे और उन पूछनेहारे स्त्रीपुरुषों को लज्जित करने लगे यद्यपि बहुधा मनुष्य अपनी आंखों देखते हैं कि कोई पुल बनाता है कोई देवी निकालता है कोई सैयद प्रगट करता है और फिर पीछे से उनका पाखंड ही खुलता है परंतु तो भी अपनी शठता को नहीं छोड़ते तुरंत छल में आविश्वास कर दौड़ने लगते हैं मूर्ख लोग सौ २ बार धोखा खाते हैं और फिर भी उन्हीं छलियों को पतियाते हैं जो झाड़ा फूंकी का विश्वास करता है उसके घर में नित्य ही यह झगड़ा लगा रहता है और जो ईश्वर का भरोसा कर दवादारू करता है वह शीघ्र ही आरोग्यता पाता है और बीमार भी नहीं होता है इसलिये कहती हूं कि महाराज आप ईश्वर का ध्यान धरें और कुछ चिंता मन में न करें मैं घूंटी आदि औषधि देती हूं भगवान चाहे तो अभी आराम होता है घबराने की बात नहीं आप इन लोगों की बात पर कभी बिश्वास न करें यह दुराचारी पाप का मूल हैं कोई २ बहुत से लोहे और पीतल के कड़े हाथों में डाल कर अपने को बड़ा जादूगर ठहराते हैं और घर २ भीख मांगते फिरते हैं जो ऐसे ही पहुंचे हुए होते तो उनकी यह दशा क्यों होती वे लोग ईश्वर के भय से अचेत हो छल छंद को बड़ा गुन समझते हैं उनका वाक्य है कि दुनिया ठगना मक्कर से और रोटी खाना

शक्कर से जिन्हें परलोक का कुछ डर है वे ऐसे कामों के निकट नहीं जाते कभी किसी अच्छे मनुष्य को झाड़ा फूंकी करते न देखा होगा मूर्ख लोग उनके गंडा तावीज़ों को बड़ी रुचि से बालकों के गले में बांधते हैं और भूत पिशाच को सत्य जानते हैं परंतु बुद्धिमान लोग ऐसी मिथ्या बातों को नहीं मानते कहावत है कि (संका डायन मनसा भूत) बन जाता है एक बार रात के समय के एक लड़के खेल रहे थे उन में से एक बड़ा औगुनी था उसने एक लड़के की अंगरखी में रस्सी बांधके किसी लकड़ी में बांध दी और भूत २ कहं भागा उसके भागते ही सब लड़के भाग उठे परंतु जिसकी अंगरखी बंधी थी वह बहुत घबराया और ज्यों ें कर अंगरखी छुड़ा भाग आया परंतु हृदय में ऐसा धड़का बैठ गया र आते ही मरगया यह दशा देख सब को यही निश्चय हुआ कि त ने झपट के मारडाला पर असल वृत्तांत से कोई भेद नहीं र्थ में न कहीं भूत है न भवीष है मन की थोथी कल्पना है इस के लोगों को समझा कलावती ने कुकरोंदे के रस में हींग डाल बच्चे और कनपटी में मली और थोड़ी सी पिला भी दी थोड़ी ही बेर पिया और खेलने लगा यह देख घर के लोगों को बड़ी प्रसन्नता हुई लावती ने कहा कि पांच बरस तक बालकों को घूंटी और चोभुजी आदि सी ही छोटी २ औषधि किसी दाई अथवा बूढ़ी आड़ी चतुर स्त्री से पूछ वे ौर ईश्व. के नाम पर भूखों और दीनों को खवावे और उसी कि..न का दृढ़ विश्वास मन में धरे और आरोग्यता के हेतु प्रार्थना न को डमाडोल कर इधर उधर मारा २ न फिरे और छलियों के में ाकर खप्पर आदि भर के वृथा धन नष्ट न करे कहावत है कि घह का खिलाया पुन्य में न पाप में कलावती की बातें सब के मन भाई और उसकी चतुराई का सब लोग प्रशंसा करने लगे ॥

मन चित्त लगा कर काम करने के विषय

दिन कृष्णदत्त बोला कि व्योपार आज कल ऐसा मंदा हो रहा ान पर बैठने को जी नहीं चाहता यह सुन कलावती बोली सदा एकसा नहीं चलता कभी मंदा कभी तेज होता

ही रहता है पर दुकान का छोड़ना उचित नहीं क्योंकि उसके अवलंब से एक तो अपनी जगह पर बैठे रहोगे कोई यह न कह सकेगा कि अमुक मनुष्य ठलुआ फिरता रहता है दूसरे कुछ न कुछ नोन तेल के लिये झड़ता ही रहेगा तीसरे बुद्धि में बिकार नहीं उत्पन्न होगा क्योंकि रुजगार छोड़ने से बुद्धि भी छोड़ देती है और मनुष्य को निकम्मा कर देती है इसलिये जब तक दूसरी जीविका का ढंग न डाल लेवे तब तक लगी जीविका को न छोड़े क्योंकि रोजी जीवन मूल है बुद्धिमान एक पांव को पहिले धर लेते हैं तब दूसरे पांव को उठाते हैं यह सुन उस की जिठानी बोली तुम ठीक कहती हो चित्त चलायमान करने से मन और भी काम में नहीं लगता और उदासी अधिक २ बढ़ती जाती है लिये मन को डमाडोल होने देना उचित नहीं मेरे गांव में एक बुद्धि नाम कायस्थ था उसको जैसे तैसे बड़ी कठिनता ... मददगारी मिली वह अपनी पिछली दशा की सुधि कर चि... अति सावधानी से काम करता था उसके काम से अधिकारिये हो औसर पा के उसे क़ानूगो कर दिया उसके एक धीमती नाम उसका ब्याह चपलमति नाम कायस्थ से हुआ वह ऐसा दुर्मति जो नौकरी उसके हाथ लगती थी उसे काम में आलस कर खो बैठत या और फिर इधर उधर भटकता फिरता था जब उसने सुना कि ससुर पेशकार हो गया तब आके उसे घेरा उसने यह सुन के हौस का मुहर्रिर करवा दिया चपलमति का स्वभाव तो पहि... बिगड़ रहा था दो महीने भी न हुए थे कि मति चलायमान हुई ... स्त्री से कहने लगा कि यह नौकरी मेरे पसंद नहीं धीमती ने कहा ... बरस छः महीना तो गुजारो बार २ नौकरी छोड़ने से हलका प्रयोजन होता है उस दशा से तो अच्छे हो कि मारे २ फिरते थे अपनी स्त्री के कहने सुनने से नौकरी तो न छोड़ी परंतु काम मन से नहीं करता था उसकी यह दशा देख तहसीलदार ने निकाल बाहर किया जो लुट... था वह महीना पंद्रह दिन में खा पीके फिर जूतियां चटकाता फि... उसने सुना कि ससुर तहसीलदार हो गया तब फिर आके घेरा ... कहा तुम एक ठौर मन चित्त लगाके चार बरस नौकरी करो...

नत कर अपनी कारगुज़ारी दिखाओ तिस पीछे तरक़्क़ी ईश्वर से चाहो यह नहीं कि काम का कांम बिगाड़ें और उलटी तरक़्क़ी का आशा रक्खो ऐसा क्योंकर हो सक्ता है देखो मेरा बाप चार रुपये का नौकर हुआ था अब दो सौ रुपये पाता है मेहनती मनुष्य को किसी की सई सिफ़ारिश की आवश्यता नहीं उसके श्रम से हाकिम और ईश्वर प्रसन्न रह के सदा उसकी वृद्धि का ध्यान रखते हैं कुछ दिनों में धीमती के पिता ने चपलमति को थानेदार करा दिया अब तो चपलमति की छः टके की धेली चलने लगी और नौ की तेरह उड़ने लगी रात दिन शराब कबाब उड़ता था धीमती ने यह दशा देख कहा कि जो पैसा हराम का आता है उसके उठाने में कुछ बिचार नहीं रहता है कवि का बचन है ॥

दोहा

रहे न कौड़ी पाप की ज्यों आवे त्यों जाय ।
लाखन को धन पाय के मरे न कफ़न पाय ॥

अधर्म की कौड़ी में शय बरकत नहीं होती और लोक परलोक में वृथा मुंह काला होता है इसलिये इस कोइले की दलाली छोड़ उन तीस रुपये ही को उत्तम जानो जो तुम्हें नौकरी के मिलते हैं उस में से पंद्रह ख़र्च करो और पंद्रह बचाते जाओ जो आड़े वक़्त में काम आवेंगे जीभ वा स्वभाव अति बिगाड़ना न चाहिये मर्याद का भोजन बस्त्र अच्छा होता है यद्यपि धीमती ने सब कुछ समझाया परंतु उस दुर्मति को एक न भाया निदान एक बार घूस के मामले में फंस गया और तीन बरस को बंदीख़ाने में बेड़ दिया गया जैसा किया वैसा फल पाया और उसका ससुर धर्मयुक्त मन लगा काम करते २ डिपुटी कलेक्टर हो गया इसलिये कहती हूं कि मन डामाडोल करना उचित नहीं यह सुन कृष्णदत्त फिर अपनी दुकान पर मन चित्त लगा बैठने लगा ॥

लाज और नवीन रीतों के बिषय

एक समय कलावती अपनी जिठानी के साथ नदी पर स्नान को गई उसी दिन दखिण के यात्री भी तीर्थ स्नान को वहां आकर ठहरे

थे उनकी स्त्रियों को देख जेठी ने कलावती से कहा कि यह स्त्रियं रूप रंग और पहराव उढ़ाव से तो अतिकुलीन दीख पड़ती हैं परंतु नीच जात की स्त्रियों की नाईं मुंह खोले फिरती हैं इन्हें नेक लज्जा नहीं है न जाने कौन देश की रहनेहारी हैं यह सुन कलावती हंसकर बोली कि जो लोग भूगोल विद्या में निपुण होते हैं वे घर बैठे ही समस्त देशों का वृत्तांत जान लेते हैं मेरी मा ने मुझे भी भूगोल विद्या पढ़ाई है इसलिये मैं इनके वृत्तांत से भली भांति भेदू हूं अति सुशील लज्जा-वान स्त्री और धर्म में अति कुशल दक्षिण का रहने हारी हैं लज्जावान कुछ मुंह ढांकने से नहीं जानी जाती क्योंकि लज्जा तो मन से सम्बन्ध रखती है जैसे कि दया संतोष ईर्षा क्रोध आदि अनेक गुण दोष हृदय से सम्बन्ध रखते हैं ऐसे ही लज्जा भी है और वह स्त्री पुरुष दोनों में रहती है जिनके हृदय में लाज है वह चाहो मुंह ढांकें चाहो न ढांकें उनके नेत्रों ही से संकोच जाना जाता है जो निर्लज्ज हैं वे मुंह छिपाने पर भी अपने दोष को नहीं छिपा सकती पहिले यहां भी मुंह ढांकने की चाल न थी परंतु जब से मुसलमानों ने इस देश में आकर नाना प्रकार के उपद्रव मचाये और पराई बहू बेटियों को सुंदर देख पकड़ने लगे तब से लोग स्त्रियों को घरों में छुपाने लगे और जिस किसी को बाहर जाने की बड़ी आवश्यकता पड़ती तो वह अपना हाथ मुंह ढांक के घर से बाहर निकलती थी इसलिये कि कोई उसके रंग रूप से भेदू न होवे इस तरह होते २ यह रीति ऐसी प्रबल हो गई कि उस भय से निर्भय होने पर भी नहीं छूट सकती और बहुधा अनजान लोग इसी को लाज कहते हैं और कुल शास्त्र की मर्याद ठहराते हैं परंतु शास्त्र में मुंह ढांकने की कहीं चर्चा भी नहीं है इस छिपा छिपी के कारण एक बड़ी भारी आपदा इस देश में आपड़ी वह यह है कि स्त्रियों का पढ़ना लिखना एक ओर से बंद होगया उस आपत काल में किसी को यह ज्ञान न रहा कि स्त्रियों के मूर्ख रहने से बहुधा संतान भी मूर्ख ही रहेगी और धीरे २ देश भर में मूर्खता फैल जावेगी दूसरे यह भी न सोचे कि स्त्रियों के मूर्ख रहने से कुल के संपूर्ण आचार भ्रष्ट हो जावेंगे क्योंकि कुल के समस्त व्योहार स्त्रियों ही के आधीन हैं मनुष्य इन बातों से अच्छे प्रकार

जानकार नहीं होते इस कारण कुछ भलासा ध्यान भी नहीं रखते निदान ऐसा हो हुआ कि देश भर में मूर्खता की बेल ने पसारा लिया और उत्तम आचरणों ने प्रस्थान किया परंतु यहां के लोगों की अपेक्षा दक्षिणी लोगों का मुसलमानों से बहुत कम समागम पड़ा इसी हेतु वहां के लोग अब तक कुछेक शास्त्र अनुसार चलते हैं और उनके यहां बहुतसी प्राचीन रीतें आज तक प्रचलित हैं परंतु यहां तो मुसलमानों ने अपना घरसा बना लिया इस कारण हिन्दुओं के बहुतेरे आचरण भ्रष्ट होगये केवल नाम के हिन्दू रह गये प्राचीन रीति के अनुसार चलनेहारे और क्रिया नेष्ठा के साधनेहारे बहुत ही थोड़े निकलेंगे अब तो बहुधा ऐसा देखने में आता है कि लोग अपने सर्वशक्तिमान ईश्वर को भूलके पीर को मलीदा चढ़ाते हैं और मियां को गुलगुला खिलाते हैं और सैयदों को चादर उढ़ाते हैं पर यह बिचार नहीं करते कि पीरों की भूठन खाने से हिन्दू धर्म की क्या दशा होगी जो कहो कि वे खाते नहीं हैं तो यह भी मूर्खता है कि उनके आगे वृथा रख कर कहे कि खाओ इन बातों से बिरले ही बचे हैं शेष तो घर २ यही देखने में आता है इसके सिवाय पहराव उढ़ाव आदि संपूर्ण बातों में अत्यन्त अंतर पड़ गया और बुद्धि में ऐसा बिकार उत्पन्न हुआ है कि लोग उत्तम आचरणों को बुरा और बुरों को अच्छा जानते हैं यह सब कारण मूर्खता ही का है क्योंकि मूर्ख स्त्रियां न किसी का ढोंग समझें न पाखंड जहां कहीं किसी ने दो चार पत्थर इकट्ठे करके सिंदूर से रंग दिये और देवी देवता के नाम से प्रसिद्ध कर दिये उन्हीं को वे बिचारी पूजने लगती हैं निज धर्म छोड़ नानक पंथी दादू पंथी आदि नये २ मत अंगीकार करती हैं जहां कोई भूठ मूठ कुछ तितंबा बना खड़ा करे वहीं लड़का मांगने को दौड़ती हैं यह नहीं सोचतीं कि ईश्वर से बढ़कर पुत्र देनेहारा और कौन है भुयां भूतेला पीर मदार और भूत पिशाच आदि को मानने से महापातक होता है शास्त्र का वाक्य है ॥

दोहा

जे नर प्रभु पद कमल तज भजे भूत बैताल ।
ते सठ रौरव नर्क पड़ पावें कष्ट कराल ॥

इसलिये जिठानी जी कुल की रीतें बे बिचारे मान कर ईश्वर से बिमुख होना उचित नहीं क्योंकि अब वे ही रीतें नहीं रही हैं जे आदि में थीं बीच में पाखंडियों ने अनेक मत प्रचलित कर दिये और मूर्खता की प्रवलता से किसी को निषेध की ज्ञानशक्ति न हुई मू स्त्रियां बे बिचारे ही कुल की रीति समझ मान लेती हैं और एक एक झगड़ा लगाये ही रहती हैं बहुतेरी स्त्रियां जिनके संतान न होती अथवा नहीं जीती वे ईश्वर को भूल नाना प्रकार की मान गौं मानती हैं कोई मदारों में बालक मुंडाती हैं कोई जखैया पै घंटा चढ़ाती हैं कोई बकरे का प्रान लिवाती कोई टुटका टोना चलाती हैं कोई परा लड़कों के बाल कतर लेती हैं कोई बंदन लगा देती हैं कोई अपने बीमार लड़के पर कुछ बस्तु उतार के खिला देती हैं यद्यपि यह कहावत चली आती है कि टुटकों गाज नहीं टलती परंतु मूर्ख स्त्रियां काहे को मानती हैं वे तो कुल की रीति जान यह दुष्ट कर्म करती हैं और पराया बुरा चेत अपना भला चाहती हैं कदाचित् यह कुल की रीति हो तो भी भाड़ में झोंकनी चाहिये कहीं पाप से भी बंश की वृद्धि होती है कवि का बचन है ॥

दोहा

वृद्धि न हुई है पाप से वृद्धि धर्म निरधार ।
सुन्यो न देख्यो सिंह के मृग के सो परवार ॥

दूसरा और भी दोहा

करे बुराई सुख चहे यह धौं कौन बिचार ।
खाड़ खने जो और को ता कों कूप तयार ॥

जिठानी जी यह नाशवान संसार अपार है इस में धर्म ही एक सार है और तो सब थोथा व्योहार है संपत्ति सन्तति आदि अंत समय कोई भी काम नहीं आता है उस कठिन काल में केवल धर्म ही बचाता है इसलिये किसी के लिये भी परमहितकारी धर्म को छोड़ना उचित नहीं बहुतेरी स्त्रियां अपने स्वाद सुख के हेतु बस्त्र आभूषण आदि अच्छे प्रकार

पति से अनेक झगड़े मचाती हैं और खुले बाज़ार कहती हैं कि चाहे चोरी करके लाओ पर हम को अमुक बस्तु ज़रूर बनवाओ जो उन से पूछें कि स्वामी पकड़ा जावे तो तुम छुड़ाओगी तो तुरंत कान पै हाथ धर अलग हो जावेंगी जब इस लोक में यह दशा है तो परलोक का क्या पता है धर्मरत नारी को चाहिये कि स्वामी को कुमार्ग से सदा बचावे न यह कि अपने स्वाद सुख के लिये प्राणप्यारे को अधर्म में फंसावे जो मनुष्य अधर्म से धन जोड़ते हैं वे मानों जीते ही जी नरक को दौड़ते हैं इसलिये नंगा भूखा रहना भला पर थोड़े से जीवन के हेतु छल छंद और अधर्म करना अच्छा नहीं धर्म से कमाइये और धर्म ही में लगाइये यह धोखा खाना उचित नहीं कि चुरे छिपे गुप चुप किये काम को कौन जानता है वह ईश्वर सर्वब्यापी सर्वज्ञ गुप्त प्रगट किये हुए प्रत्येक काम को देखता है उस से कोई बात छिप नहीं सक्ती इस लिये उस से सदा डरना चाहिये और कभी बुरे कर्म को मन चलाइये क्योंकि मन में मनोरथ ही करने से मनुष्य दोषभागी होजाता है इस कारण प्रत्येक काम धर्म के साथ करना उचित है अपने आश्रितों का भरण पोषण करना और दुखियों का दुःख हरना परोपकार मन में धरना अंधे अपाहिजों को यथाशक्ति देना यही अंत समय काम आवेगा कवि का बचन है ॥

दोहा

जग में दिया अनूप है दिया करो सब कोय ।
कर को धरो न पायहो जो कर दिया न होय ॥

परंतु देने में इतना बिचार अवश्य चाहिये कि दुराचारी मनुष्यों को न देवे क्योंकि वे दुष्ट कुमार्ग में उठाके आप नरक में जाते हैं और दाता को भी ले जाते हैं कुकर्मी अतिकठिन होते हैं उन से डरना चाहिये जो मनुष्य लोक परलोक का ध्यान कर प्रत्येक काम धर्मयुक्त बुद्धिमानी और चतुरई से करते हैं और संसार में यश लेते हैं उन्हीं का जन्म धन्य और सराहने योग्य है इतनी कथा सुन जेठा गद गद हो

बोली कि कलावती तुम धन्य हो और तुम्हारे माता पिता धन्य हैं जिनकी कुक्षा में तुम ने जन्म लिया मैं भी तुम्हारे सत्संग से धन्यभागिनी हुई कलावती ने अपने पुत्र और पुत्री को विद्या गुण सिखा पढ़ा के ब्याह गौना आदि किया और सुखपूर्वक जन्म बिताय लोक परलोक में यश पाया जो पुत्री इस पुस्तक को मन चित्त लगाके पढ़ेंगी और समझेंगी वह सदा पतिवल्लभा रह दोनों कुल की कीर्त्ति बढ़ावेंगी और लोक परलोक में नित नया अनंद पावेंगी ॥

दोहा

बनिता बुद्धि प्रकाशिनी जो पढ़िहै धर ध्यान।
सो पुत्री दुहु लोक में करिहै निज कल्यान॥
निस दिन मन चित लायके पढ़े सुनें बर बाल।
रामलाल मन कामना पुजवें दीन दयाल॥
युग सहस् सत ऊन अरु सप्त बिंस परमान।
शुभ सम्वत बिक्रम नृपति बुध जन लीहैं जान॥
बिजय दसहरा के दिना ईश्वर आज्ञा पाय।
रामलाल या ग्रंथ को पूरण कियो बनाय॥
मैनपुरी के ज़िले में है बर बेवर ग्राम।
रामलाल मनवित तहां लहत अधिक बिश्राम॥

॥ इति ॥

सूचीपत्र